PRGI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 16
अंक : 034
दि. 03.06.2026,
बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

क्या बंगाल में दोहराएगा महाराष्ट्र का सियासी अध्याय? तृणमूल में बगावत की आहट से ममता की सबसे बड़ी परीक्षा

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की राजनीति इन दिनों एक ऐसे मोड़ पर खड़ी दिखाई दे रही है, जहां राज्य की सबसे प्रभावशाली क्षेत्रीय राजनीतिक ताकतों में से एक तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) अपने गठन के बाद के सबसे बड़े आंतरिक संकट से जूझती नजर आ रही है। हालिया विधानसभा चुनाव में सत्ता गंवाने के बाद पार्टी के भीतर असंतोष, नेतृत्व को लेकर सवाल और विधायकों की नाराजगी अब खुलकर सामने आने लगी है। राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा तेजी से फैल रही है कि टीएमसी के भीतर महाराष्ट्र की शिवसेना जैसी टूट की जमीन तैयार हो रही है और यदि हालात नहीं संभले तो पार्टी को अपने विधायकों के साथ-साथ चुनाव चिह्न तक पर चुनौती का सामना करना पड़ सकता है।

पार्टी में उठे इस सियासी तूफान की जड़ विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष की नियुक्ति को लेकर पैदा हुआ विवाद माना जा रहा है। यही विवाद धीरे-धीरे इतना बढ़ गया कि उसने टीएमसी नेतृत्व और कई विधायकों के बीच अविश्वास की खाई पैदा कर दी। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि चुनावी हार के बाद जिस संगठनात्मक समीक्षा और पुनर्गठन की जरूरत थी, उसकी जगह पार्टी के भीतर असंतोष और आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू हो गया, जिसने संकट को और गहरा कर दिया।

दरअसल, विधानसभा में विपक्ष के नेता के चयन को लेकर पार्टी के भीतर दो धड़े बन गए। एक वर्ग चाहता था कि युवा विधायक ऋतब्रत बनर्जी को नेता प्रतिपक्ष बनाया जाए, जबकि पार्टी नेतृत्व ने वरिष्ठ नेता शोभनदेव चट्टोपाध्याय के नाम को आगे बढ़ाया। विवाद तब और बढ़ गया जब ऋतब्रत बनर्जी और संदीपन साहा ने आरोप लगाया कि नेता प्रतिपक्ष के समर्थन संबंधी दस्तावेजों पर उनके हस्ताक्षर कथित रूप से बिना अनुमति के दर्शाए गए। इस मामले की शिकायत

विधानसभा सचिवालय तक पहुंची और देखते ही देखते यह विवाद टीएमसी की आंतरिक राजनीति का सबसे बड़ा मुद्दा बन गया।

पार्टी नेतृत्व ने इस घटनाक्रम को अनुशासनहीनता और पार्टी विरोधी गतिविधि मानते हुए ऋतब्रत बनर्जी और संदीपन साहा को पार्टी से निष्कासित कर दिया। लेकिन यह कार्रवाई विवाद को समाप्त करने के बजाय और अधिक भड़काने वाली साबित हुई। दोनों नेताओं के निष्कासन के बाद कई विधायकों ने खुलकर या परोक्ष रूप से उनके प्रति सहानुभूति दिखाई और यहीं से बगावत की चर्चाओं ने जोर पकड़ना शुरू कर दिया।

स्थिति की गंभीरता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि हाल ही में पार्टी प्रमुख ममता बनर्जी द्वारा बुलाई गई महत्वपूर्ण बैठक में बड़ी संख्या में विधायक अनुपस्थित रहे। रिपोर्टों के अनुसार 80 विधायकों में से केवल लगभग 20 विधायक ही बैठक में पहुंचे, जबकि बाकी सदस्य अनुपस्थित रहे। पार्टी ने इसके पीछे स्थानीय राजनीतिक परिस्थितियों और व्यस्तताओं को कारण बताया, लेकिन राजनीतिक पर्यवेक्षकों ने इसे संगठन के भीतर बढ़ती नाराजगी का संकेत माना।

इस बीच टीएमसी के निलंबित प्रवक्ता ऋजु दत्ता के दावों ने राजनीतिक माहौल को और गर्म कर दिया। उन्होंने दावा किया कि लगभग 50 विधायक ऋतब्रत बनर्जी के संपर्क में हैं और वे स्वयं को "असली तृणमूल कांग्रेस" बताने की रणनीति पर काम कर रहे हैं। इतना ही नहीं, बागी खेमे द्वारा पार्टी के प्रतिष्ठित 'जोड़ा फूल' चुनाव चिह्न पर भी दावा ठोकने की संभावना जताई जा रही है। हालांकि इन दावों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन उन्होंने राज्य की राजनीति में भारी हलचल पैदा कर दी है।

बंगाल की राजनीति में इस घटनाक्रम की तुलना लगातार महाराष्ट्र में हुई शिवसेना की ऐतिहासिक टूट से की जा रही है। वहां एकनाथ शिंदे के नेतृत्व में बड़ी संख्या में विधायकों ने उद्धव ठाकरे के खिलाफ बगावत की थी, जिसके बाद पार्टी दो हिस्सों में बंट गई थी और अंततः चुनाव चिह्न को लेकर भी कानूनी और राजनीतिक संघर्ष हुआ था। बंगाल में भी अब वही सवाल उठ रहा है कि यदि बड़ी संख्या में विधायक अलग गुट बनाते हैं तो क्या टीएमसी को वैसी ही चुनौती का सामना करना पड़ सकता है।

राजनीतिक समीकरणों की दृष्टि से भी यह मामला बेहद महत्वपूर्ण है। पश्चिम बंगाल विधानसभा में टीएमसी के 80 विधायक हैं। दलबदल विरोधी कानून के तहत किसी भी गुट को वैध विभाजन का दावा करने के लिए कम से कम दो-तिहाई विधायकों का समर्थन चाहिए, जो लगभग 53 विधायकों के बराबर है। ऐसे में 50 विधायकों के समर्थन का दावा इस आंकड़े के बेहद करीब माना जा रहा है और इसी कारण यह मामला केवल अटकलों तक सीमित नहीं रह गया है। दूसरी ओर ममता बनर्जी और उनके करीबी नेता लगातार यह संदेश देने की कोशिश कर रहे हैं कि पार्टी एकजुट है और कुछ लोग सुनियोजित तरीके से भ्रम फैलाने का प्रयास कर रहे हैं। ममता बनर्जी ने सार्वजनिक रूप से आरोप लगाया है कि उनकी पार्टी को तोड़ने के लिए दबाव और प्रलोभन का इस्तेमाल किया जा रहा है। वहीं वरिष्ठ नेता कुणाल घोष ने विधायकों से भावनात्मक अपील करते हुए कहा है कि वे ममता बनर्जी के नेतृत्व और पार्टी के संघर्ष को याद रखें।

फिलहाल ऋतब्रत बनर्जी ने नई पार्टी बनाने की संभावना से इनकार किया है, लेकिन उन्होंने यह जरूर कहा है कि तृणमूल कांग्रेस में अब स्वतंत्र रूप से अपनी बात रखने की गुंजाइश कम होती जा रही है। उनके इस बयान ने भी यह संकेत दिया है कि असंतोष केवल व्यक्तिगत नहीं बल्कि संगठनात्मक स्तर पर मौजूद है।

राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि आगामी बजट सत्र और आने वाले कुछ सप्ताह टीएमसी के भविष्य के लिए निर्णायक साबित हो सकते हैं। यदि नेतृत्व असंतुष्ट विधायकों को साथ लाने में सफल रहता है तो पार्टी इस संकट से उबर सकती है, लेकिन यदि मतभेद और बढ़ते हैं तो बंगाल की राजनीति में एक नया अध्याय शुरू हो सकता है। 1998 में गठन के बाद पहली बार तृणमूल कांग्रेस ऐसी स्थिति में पहुंची है, जहां उसके संगठनात्मक अस्तित्व और नेतृत्व क्षमता दोनों की एक साथ परीक्षा हो रही है।

पश्चिम बंगाल की राजनीति में फिलहाल सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या यह असंतोष कुछ दिनों में शांत हो जाएगा या फिर यह वास्तव में महाराष्ट्र जैसी राजनीतिक पुनर्संरचना का रूप ले लेगा। इसका जवाब आने वाले दिनों की घटनाएं ही देंगी, लेकिन इतना तय है कि तृणमूल कांग्रेस के सामने यह अब तक की सबसे कठिन राजनीतिक चुनौती बन चुकी है।

रुद्रम-2 ने बढ़ाई भारत की मारक क्षमता: दुश्मन के रडार और एयर डिफेंस सिस्टम पर करेगा सटीक प्रहार

नई दिल्ली। भारत ने स्वदेशी रक्षा तकनीक के क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए अपनी सामरिक शक्ति को नई मजबूती प्रदान की है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) द्वारा विकसित उन्नत एंटी-रेडिएशन मिसाइल 'रुद्रम-2' का भारतीय वायुसेना के Su-30MKI लड़ाकू विमान से सफल परीक्षण किया गया। इस परीक्षण ने न केवल मिसाइल की तकनीकी क्षमता को प्रमाणित किया, बल्कि यह भी साबित कर दिया कि भारत अब आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक युद्ध और हवाई अभियानों में आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है।

रुद्रम-2 का सफल परीक्षण ऐसे समय हुआ है जब दुनिया भर में युद्ध की प्रकृति तेजी से बदल रही है। आधुनिक युद्ध केवल टैंकों, तोपों और लड़ाकू विमानों तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि अब इलेक्ट्रॉनिक निगरानी, रडार नेटवर्क, संचार प्रणाली और वायु रक्षा तंत्र किसी भी देश की सुरक्षा व्यवस्था की रीढ़ बन चुके हैं। ऐसे में दुश्मन की इन प्रणालियों को निष्क्रिय करने वाली मिसाइलें युद्ध के शुरुआती चरण में निर्णायक भूमिका निभाती हैं। रुद्रम-2 को भी इसी उद्देश्य से विकसित किया गया है।

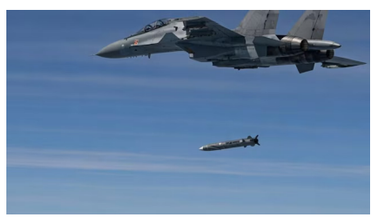

रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार रुद्रम-2 एक अत्याधुनिक एयर-टू-सर्फेस एंटी-रेडिएशन मिसाइल है, जिसे विशेष रूप से दुश्मन के रडार, एयर डिफेंस सिस्टम, संचार केंद्रों और इलेक्ट्रॉनिक निगरानी तंत्र को नष्ट करने के लिए डिजाइन किया गया है। इसकी अनुमानित मारक क्षमता लगभग 300 किलोमीटर तक है, जो इसे भारतीय वायुसेना के लिए एक अत्यंत प्रभावशाली हथियार बनाती है। इतनी लंबी दूरी से लक्ष्य को भेदने की क्षमता के कारण लड़ाकू विमानों को दुश्मन की हवाई सीमा के अत्यधिक निकट जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, जिससे उनकी सुरक्षा भी बढ़ जाती है।

रुद्रम-2 की सबसे बड़ी विशेषता इसकी उन्नत लक्ष्य-भेदी क्षमता है। सामान्यतः जब किसी देश के रडार सिस्टम को यह पता चलता है कि उसकी ओर एंटी-रेडिएशन मिसाइल बढ़ रही है, तो वह अपना रडार बंद कर देता है। यह एक पारंपरिक बचाव रणनीति है, क्योंकि अधिकांश एंटी-रेडिएशन मिसाइलें रडार से निकलने वाले विद्युतचुंबकीय संकेतों का पीछा करती हैं। रडार बंद होते ही उन्हें लक्ष्य की पहचान करने में कठिनाई हो सकती है। लेकिन रुद्रम-2 इस चुनौती से निपटने के लिए अत्याधुनिक तकनीकों से लैस है। मिसाइल में इनर्शियल नेविगेशन सिस्टम (INS) और सैटेलाइट नेविगेशन (SATNAV) जैसी उन्नत प्रणालियां लगी हैं, जो लक्ष्य की अंतिम ज्ञात स्थिति को याद रखती हैं। यदि दुश्मन अंतिम क्षणों में अपना रडार बंद भी कर दे, तब भी मिसाइल उसकी अंतिम लोकेशन तक पहुंचकर हमला करने में सक्षम रहती है। यही कारण है कि आधुनिक युद्धक्षेत्र में इसे अत्यंत घातक हथियार माना जा रहा है।

सैन्य विश्लेषकों का मानना है कि रुद्रम-2 भारतीय वायुसेना के लिए 'फोर्स मल्टीप्लायर' साबित हो सकती है। किसी भी युद्ध में सबसे पहले दुश्मन की हवाई सुरक्षा प्रणाली को कमजोर करना आवश्यक माना जाता है। जब तक दुश्मन के रडार और एयर डिफेंस नेटवर्क सक्रिय रहते हैं, तब तक लड़ाकू विमानों के लिए गहरे अंदर तक प्रवेश करना जोखिम भरा होता है। रुद्रम-2 ऐसे रडार स्टेशनों को खोजकर नष्ट करती है और आगे आने वाले विमानों के लिए सुरक्षित मार्ग तैयार करती है।

युद्धक रणनीति में इस प्रकार के अभियानों को SEAD अर्थात् 'सप्रेशन ऑफ एनिमी एयर डिफेंस' कहा जाता है। दुनिया की प्रमुख वायु सेनाएं लंबे समय से इस रणनीति का उपयोग करती रही हैं। अब रुद्रम-2 के माध्यम से भारतीय वायुसेना भी इस क्षेत्र में अपनी क्षमता को और अधिक मजबूत कर रही है। विशेषज्ञों के अनुसार किसी भी बड़े सैन्य अभियान की सफलता काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि दुश्मन की वायु रक्षा प्रणाली को कितनी जल्दी और प्रभावी ढंग से निष्क्रिय किया जा सकता है। रुद्रम-2 केवल एंटी-रेडिएशन मिशनों तक सीमित नहीं है। इसे दो प्रमुख प्रकार के अभियानों में इस्तेमाल किया जा सकता है। पहला है ग्राउंड अटैक मिशन, जिसमें यह दुश्मन के बंकरों, एयरबेस, भूमिगत विमान आश्रयों, गोला-बारूद भंडारण केंद्रों और अन्य सैन्य ठिकानों पर सटीक हमला कर सकती है।

मरीजों के हक पर डाका नहीं चलेगा: अवैध वसूली पर सिविल अस्पताल का बड़ा एक्शन

सूरत। सूरत के नए सिविल अस्पताल में मरीजों से कथित अवैध वसूली का मामला सामने आने के बाद अस्पताल प्रशासन ने त्वरित और सख्त कार्रवाई करते हुए संबंधित कंप्यूटर ऑपरेटर को तत्काल ड्यूटी से हटा दिया है। सोशल मीडिया पर वायरल हुए एक वीडियो में केस विंडो पर कार्यरत आउटसोर्सिंग एजेंसी का कर्मचारी मरीजों से 20 रुपये लेते हुए दिखाई देने का दावा किया गया था। वीडियो सामने आते ही अस्पताल प्रशासन हरकत में आया और मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच के साथ-साथ जिम्मेदार कर्मचारी के खिलाफ कार्रवाई शुरू कर दी गई। देश के सबसे व्यस्त सरकारी अस्पतालों में गिने जाने वाले सूरत के नए सिविल अस्पताल में प्रतिदिन हजारों मरीज इलाज के लिए पहुंचते हैं। इनमें बड़ी संख्या आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों की होती है, जो सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं पर निर्भर रहते हैं। ऐसे में मरीजों से कथित रूप से अतिरिक्त राशि वसूलने की घटना ने अस्पताल प्रशासन की कार्यप्रणाली और निगरानी व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए। हालांकि प्रशासन ने स्पष्ट संकेत दिया है कि मरीजों के हितों के साथ किसी भी प्रकार का

समझौता स्वीकार नहीं किया जाएगा। मामले के सामने आते ही मेडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ. पारुल वडगामा की अध्यक्षता में आपात समीक्षा बैठक बुलाई गई। बैठक में रेजिडेंट मेडिकल ऑफिसर (आरएमओ) डॉ. केतन नायक, प्रभारी नर्सिंग सुपरिटेंडेंट इकबाल कड़ीवाला, विभिन्न आउटसोर्सिंग एजेंसियों के प्रतिनिधि, सुपरवाइजर, डेटा ऑपरेटर और सुरक्षा अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में अस्पताल की कार्यप्रणाली की समीक्षा करते हुए स्पष्ट किया गया कि भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, वित्तीय अनियमितताओं और अनुशासनहीनता के प्रति अस्पताल की नीति पूरी तरह जीरो टॉलरेंस की होगी। डॉ. पारुल वडगामा ने सभी कर्मचारियों को निर्देश दिए कि अस्पताल आने वाले प्रत्येक मरीज के साथ सम्मानजनक, संवेदनशील और मानवीय व्यवहार किया जाए। उन्होंने कहा कि गरीब और जरूरतमंद मरीज अस्पताल की सेवाओं पर भरोसा करके यहां आते हैं, इसलिए उनकी सुविधा और सम्मान सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि पंजीकरण प्रक्रिया के दौरान मरीजों का नाम, पता और अन्य विवरण पूरी सावधानी के साथ दर्ज किए जाएं ताकि इलाज की प्रक्रिया में किसी प्रकार की तकनीकी या प्रशासनिक बाधा उत्पन्न न हो। बैठक में कर्मचारियों को यह भी स्पष्ट निर्देश दिए गए कि वे अपने दायित्वों का निर्वहन पूर्ण पारदर्शिता और ईमानदारी के साथ करें। मरीजों को अनावश्यक रूप से प्रतीक्षा न करानी पड़े, इसके लिए कार्यप्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाने पर जोर दिया गया। अस्पताल प्रशासन का मानना है कि समय पर और व्यवस्थित सेवाएं उपलब्ध कराने से मरीजों का भरोसा मजबूत होगा और शिकायतों की संख्या में कमी आएगी।

घटना के बाद आउटसोर्सिंग एजेंसियों की भूमिका भी समीक्षा के दायरे में आ गई है। अस्पताल प्रशासन ने एजेंसियों के सुपरवाइजरों को निर्देश दिए हैं कि वे केस विंडो और अन्य महत्वपूर्ण विभागों की नियमित निगरानी करें तथा यह सुनिश्चित करें कि कोई भी कर्मचारी नियमों का उल्लंघन न करे। साथ ही कर्मचारियों की समयबद्ध उपस्थिति और कार्य निष्पादन की भी लगातार निगरानी करने को कहा गया है।

अस्पताल प्रशासन ने चेतावनी दी है कि भविष्य में यदि किसी भी कर्मचारी के खिलाफ रिश्वत लेने, वित्तीय अनियमितता करने या मरीजों के साथ दुर्व्यवहार करने की शिकायत सामने आती है तो उसके खिलाफ कठोर अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी। जरूरत पड़ने पर सेवा समाप्ति, ब्लैकलिस्टिंग और कानूनी कार्रवाई जैसे कदम भी उठाए जा सकते हैं।

स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों का मानना है कि सरकारी अस्पतालों में पारदर्शिता और जवाबदेही बनाए रखना बेहद आवश्यक है, क्योंकि यहां बड़ी संख्या में ऐसे लोग इलाज के लिए आते हैं जिनके पास निजी अस्पतालों का खर्च उठाने की क्षमता नहीं होती।

तमिलनाडु भाजपा में भूचाल: अन्नामलाई ने नितिन नवीन को सौंपा इस्तीफा नई राजनीतिक पारी की तैयारी से दक्षिण की राजनीति में हलचल

नई दिल्ली/चेन्नई। तमिलनाडु की राजनीति में एक बड़ा घटनाक्रम सामने आया है, जिसने न केवल भारतीय जनता पार्टी बल्कि पूरे दक्षिण भारतीय राजनीतिक परिदृश्य को चर्चा के केंद्र में ला दिया है। तमिलनाडु भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और पार्टी के सबसे लोकप्रिय चेहरों में शामिल रहे के. अन्नामलाई ने भाजपा से अपना इस्तीफा सौंप दिया है। उन्होंने नई दिल्ली पहुंचकर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन से मुलाकात की और उन्हें पांच पन्नों का इस्तीफा सौंपा। इसके बाद उन्होंने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और संगठन के वरिष्ठ नेताओं से भी चर्चा की। इस घटनाक्रम को भाजपा की दक्षिण भारत रणनीति के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

पूर्व आईपीएस अधिकारी अन्नामलाई पिछले कुछ वर्षों में तमिलनाडु में भाजपा का सबसे प्रमुख चेहरा बनकर उभरे थे। आक्रामक जनसंपर्क अभियानों, पदयात्राओं और भ्रष्टाचार विरोधी अभियानों के माध्यम से उन्होंने राज्य में भाजपा को नई पहचान दिलाने का प्रयास किया था। पार्टी के भीतर उन्हें भविष्य के बड़े दक्षिण भारतीय नेता के रूप में देखा जाता था। ऐसे में उनका इस्तीफा

भाजपा के लिए केवल एक संगठनात्मक नुकसान नहीं बल्कि राजनीतिक दृष्टि से भी एक बड़ा झटका माना जा रहा है।

अन्नामलाई के इस्तीफे को लेकर कई महीनों से अटकलें लगाई जा रही थीं। तमिलनाडु भाजपा अध्यक्ष पद से हटाए जाने और नैनार नागेंद्रन को प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने के बाद से ही उनके भविष्य को लेकर सवाल उठने लगे थे। इसके अलावा राज्य में भाजपा और एआईएडीएमके के बीच बढ़ती राजनीतिक नजदीकियों को लेकर भी अन्नामलाई की असहमति की खबरें लगातार सामने आती रही थीं। बताया जाता है कि वह तमिलनाडु में भाजपा को स्वतंत्र राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित करने के पक्षधर थे, जबकि पार्टी का केंद्रीय नेतृत्व गठबंधन की राजनीति को प्राथमिकता दे रहा था।

राजनीतिक सूत्रों के अनुसार अन्नामलाई दिल्ली पहुंचने से पहले ही अपना अंतिम निर्णय ले चुके थे। उनकी मुलाकातें किसी समझौते या मनाने की प्रक्रिया का हिस्सा नहीं थीं, बल्कि वह पार्टी नेतृत्व को सम्मानपूर्वक अपने फैसले से अवगत कराने के लिए दिल्ली गए थे। बताया जा रहा है कि उन्होंने अपने इस्तीफे में संगठनात्मक और वैचारिक दोनों प्रकार के कारणों का उल्लेख किया है।

सबसे अधिक चर्चा उनकी संभावित नई राजनीतिक पार्टी को लेकर हो रही है। अन्नामलाई के समर्थकों ने सोशल मीडिया पर 'मक्कल शक्ति अय्यकम' नामक एक नए राजनीतिक मंच के झंडे और प्रतीक चिन्हों की तस्वीरें साझा की हैं। उनके करीबी सूत्रों का दावा है कि नई राजनीतिक पहल की तैयारियां काफी आगे बढ़ चुकी हैं और आने वाले महीनों में इसकी औपचारिक घोषणा की जा सकती है।

सूत्रों के मुताबिक अन्नामलाई जिस नए राजनीतिक मंच की तैयारी कर रहे हैं, वह स्वयं को क्षेत्रीय लेकिन राष्ट्रीय दृष्टिकोण वाली पार्टी के रूप में प्रस्तुत कर सकता है। इस प्रस्तावित मंच का फोकस तमिल पहचान, सुशासन, पारदर्शिता और विकास की राजनीति पर रहने की संभावना बताई जा रही है। उनके समर्थकों का मानना है कि तमिलनाडु में द्रविड़ राजनीति के पारंपरिक मॉडल और राष्ट्रीय दलों के बीच एक वैकल्पिक राजनीतिक स्थान मौजूद है, जिसे अन्नामलाई भरने की कोशिश कर सकते हैं।

अन्नामलाई का राजनीतिक सफर भी काफी दिलचस्प रहा है। कर्नाटक कैडर के आईपीएस अधिकारी रहे अन्नामलाई ने सरकारी सेवा छोड़कर राजनीति में प्रवेश किया था। वर्ष 2020 में भाजपा में शामिल होने के बाद उन्होंने तेजी से अपनी पहचान बनाई और कुछ ही वर्षों में तमिलनाडु भाजपा के सबसे प्रभावशाली नेता बन गए। उनकी 'एन मन, एन मक्कल' यात्रा ने उन्हें राज्य के दूरदराज इलाकों तक पहुंचाया और भाजपा को ग्रामीण क्षेत्रों में भी चर्चा का विषय बनाया।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यदि अन्नामलाई वास्तव में नई पार्टी का गठन करते हैं तो इसका असर केवल भाजपा पर ही नहीं पड़ेगा, बल्कि द्रमुक (DMK), एआईएडीएमके और अभिनेता विजय की पार्टी टीवीके के राजनीतिक समीकरणों पर भी पड़ सकता है। विशेष रूप से युवा मतदाताओं और शहरी मध्यम वर्ग के बीच उनकी लोकप्रियता उन्हें एक अलग पहचान दिला सकती है। हालांकि किसी नई पार्टी को मजबूत संगठन खड़ा करने और चुनावी सफलता हासिल करने में लंबा समय लग सकता है।

भाजपा नेतृत्व की ओर से फिलहाल इस पूरे घटनाक्रम पर कोई विस्तृत आधिकारिक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। लेकिन पार्टी के भीतर यह स्वीकार किया जा रहा है कि अन्नामलाई का जाना तमिलनाडु इकाई के लिए महत्वपूर्ण क्षति है। वहीं उनके समर्थक इसे एक नए राजनीतिक अध्याय की शुरुआत के रूप में देख रहे हैं।

अब पूरे देश की नजर अन्नामलाई की अगली घोषणा पर टिकी है। क्या वह वास्तव में नई पार्टी बनाकर तमिलनाडु की राजनीति में तीसरा विकल्प तैयार करेंगे, या फिर कोई नया सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन शुरू करेंगे, इसका जवाब आने वाले दिनों में मिल जाएगा। लेकिन इतना तय है कि उनके इस्तीफे ने दक्षिण भारतीय राजनीति में नई बहस और नए समीकरणों की शुरुआत कर दी है।

संपादकीय

विराट और वैभव

भले ही फटाफट क्रिकेट का मक्का कहे जाने वाला आईपीएल बाजार और नई पीढ़ी के जुनून का संगम हो, लेकिन लोकप्रियता के नये आयाम तय करता यह खेल अब दुनिया के क्रिकेट प्रेमियों की पहली पसंद बन गया है। इस बार इंडियन प्रीमियर लीग के सबसे चमकीले सितारे बनकर उभरे टी-20 सनसनी वैभव सूर्यवंशी। महज पंद्रह साल की उम्र में उनकी कामयाबी हैरत में डालने वाली है। वहीं अनुभवी क्रिकेटर विराट कोहली ने अपने खास अंदाज में सबका ध्यान आकर्षित किया। इस 37 वर्षीय दिग्गज क्रिकेटर ने फाइनल में तूफानी अर्धशतक लगाकर रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु यानी आरसीबी को लगातार दूसरी बार ट्राफी दिलाई। दो महीने तक चले इस टूर्नामेंट में कोहली की फॉर्म और फिटनेस शानदार रही है। यही वजह है कि वर्ष 2027 एकदिवसीय क्रिकेट के विश्व कप में उनकी भागीदारी अब लगभग तय लग रही है। खुद कोहली ने इस बात को स्वीकार किया है कि उन्हें अपनी मनःस्थिति में बदलाव लाने और युवा खिलाड़ियों से थोड़ा सीखने की जरूरत थी, ताकि वे टी-20 क्रिकेट में अपने खेल को नये सिरे से निखार सकें। यह सुखद ही है कि इस दिग्गज क्रिकेटर की यह ईमानदार स्वीकारोक्ति भारतीय क्रिकेट को आकार दे रही स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की खूबसूरत बानगी को ही दर्शाती है। निस्संदेह, हाल ही में संपन्न हुए इंडियन प्रीमियर लीग सीजन ने साफ दिखाया कि दो पीढ़ियों के क्रिकेटर कैसे एक-दूसरे के पूरक भी हो सकते हैं। वास्तव में, विराट कोहली आज भी एक प्रभावशाली खिलाड़ी की छवि को बनाये हुए हैं। वहीं वैभव सूर्यवंशी जैसे उदीयमान खिलाड़ी यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि इस फटाफट क्रिकेट में खेल का निरंतर विकास होता रहेगा। यह सुखद ही है कि राजस्थान रॉयल्स के इस प्रतिभाशाली खिलाड़ी सूर्यवंशी ने अधिकांश पुरस्कार अपने नाम किए हैं। मसलन मोस्ट वैल्यूएबल प्लेयर, इमर्जिंग प्लेयर ऑफ द सीजन, सुपर स्ट्राइक ऑफ द सीजन, ऑरेंज कैप विजेता और सुपर सिक्स ऑफ द सीजन जैसे खिताब हासिल किए।

इसमें दो राय नहीं कि वैभव सूर्यवंशी के क्रिकेट के वैभव ने आज पूरी दुनिया का ध्यान खींचा है। क्रिकेट की दुनिया के तमाम दिग्गज क्रिकेटर इस उदीयमान खिलाड़ी के क्रिकेट के कारनामों से हतप्रभ हैं। वे वैभव को आशीष व अनुभव दे रहे हैं। यहां तक कि सचिन तेंदुलकर ने उसे अपना स्वाभाविक क्रिकेट खेलने की सलाह तक दी है। इतना ही नहीं, भारत के चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान में भी वैभव को पूरा लाड मिल रहा है। पूरे पाकिस्तान में उसकी खेल तकनीक की खूब चर्चा होती है। निस्संदेह, उनकी निडर बल्लेबाजी और उल्लेखनीय रूप से निरंतर बेहतर खेलना, क्रिकेट के छोटे प्रारूप के प्रति नई पीढ़ी के साहसिक दृष्टिकोण को दर्शाता है। हालांकि, उनकी प्रतिभा को लगातार अभ्यास से हासिल व कुछ लोगों द्वारा नैसर्गिक प्रतिभा कहा जा रहा है, लेकिन चर्चा उनकी इतनी कम उम्र में हासिल परिपक्वता को लेकर भी है। सही मायने में दबाव में बेहतर प्रदर्शन करने की सूर्यवंशी की क्षमता ठीक उसी गुण को दर्शाती है,जिसने वर्षों तक अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में कोहली की सफलता का मार्ग प्रशस्त किया है। निस्संदेह, मौजूदा इंडियन प्रीमियर लीग के संस्करण में, जिस तरह क्रिकेट प्रतिभाओं की बड़ी संख्या में मौजूदगी नजर आती है, उसे टी-20 विश्व चैंपियन भारत के लिये शुभ संकेत ही कहा जा सकता है। यह सुखद ही है कि वर्ष 2028 में होने वाले ओलंपिक खेलों तथा वर्ष 2030 में होने वाले राष्ट्रमंडल खेलों में टी-20 क्रिकेट को शामिल किया जा रहा है। ऐसे में भरोसा बढ़ता है कि क्रिकेट को दीवानगी के साथ जीने वाले इस देश को आने वाले वर्षों में क्रिकेट की कई बड़ी उपलब्धियां हासिल हो सकती हैं। विश्वास किया जाना चाहिए कि दुनिया का सबसे धनी क्रिकेट बोर्ड बीसीसीआई महिला क्रिकेट को भी पुरुष क्रिकेट के समान निखरने हेतु संबल देगा। हालांकि, भारत में महिला टी-20 क्रिकेट की घरेलू श्रृंखलाएं आरंभ हो चुकी हैं, लेकिन अभी इस दिशा में काफी कुछ किया जाना बाकी है। ताकि भारत क्रिकेट के सभी प्रारूपों में अपनी बादशाहत कायम रख सके।

एक रेशमी आवाज़ का यूं खामोश होना

> वर्ष 1964 में मशहूर देशभक्ति गीत 'ए मेरे वतन के लोगों' को गाने के लिए सुमन कल्याणपुर का चयन हुआ। सुमन कल्याणपुर ने इस गीत और मौके की महत्ता को समझते हुए गाने की तैयारी भी कर ली। यहां तक कि प्रधानमंत्री नेहरू के सामने इसकी रिहर्सल भी हुई, लेकिन ऐन वक्त पर यह गीत लता मंगेशकर को दे दिया गया।

अप्रैल के पहले पखवाड़े से ही संगीत की दुनिया पर काल के क्रूर पंजे दुखदायी बने हुए हैं। 12 अप्रैल को पार्श्व गायिका आशा भोसले, 14 अप्रैल को हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायिका विदुषी नीला भागवत, 14 मई को तबला वादक साबिर खान के आकस्मिक निधन से गहराए दुख से अभी उबर भी नहीं पाए थे कि 31 मई की शाम 89 वर्षीय पार्श्व गायिका सुमन कल्याणपुर इस फानी दुनिया से रुखसत हो गईं।

पार्श्व गायिका के रूप में सुमन कल्याणपुर ने अपने लंबे करिअर में 740 से अधिक फ़िल्मी और गैर-फ़िल्मी गीतों को अपनी सुरीली आवाज दी। हिंदी के अलावा उन्होंने मराठी, बंगाली, गुजराती, भोजपुरी, पंजाबी, असमिया, कन्नड़ आदि अन्य भाषाओं में भी गाया। मोहम्मद रफी के साथ 140 से अधिक युगल गीत गाने का भी उनका रिकॉर्ड है। वर्ष 2023 में उनके योगदान के लिए उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। लेकिन सुमन कल्याणपुर के मामले में यह सवाल ही बेमानी हो जाता है। दरअसल, नियति ने उनके जीवन में ऐसा खेल खेला कि जिस सम्मान की वह हकदार थीं, वह उन्हें मिला ही नहीं।

28 जनवरी, 1937 को कलकत्ता में सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया में कार्यरत शंकर राव हेमाडी की पुत्री के रूप में जन्मी सुमन कल्याणपुर छह वर्ष की उम्र में पिता का ट्रांसफर होने के कारण मुंबई आ गई थीं। बचपन से ही शांत और मर्यादित सुमन कला प्रेमी थीं। चित्रकला में गहरी रुचि के चलते सुमन ने जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट में दाखिला भी लिया। एकाएक सुमन संगीत की ओर आकर्षित हुईं और केशवराव भोले से संगीत सीखना शुरू किया तथा उस्ताद ख़ान अब्दुल रहमान ख़ान व गुरुजी मास्टर नवरंग से संगीत की विधिवत शिक्षा प्राप्त की। साल 1952 में सुमन को ऑल इंडिया रेडियो पर गाने का अवसर मिला।

सुरीली, संयत आवाज़ की धनी सुमन को अभिनेता व फ़िल्ममेकर शेख मुख्तार ने रेडियो पर सुना तो शुक्राची चांदनी नामक मराठी फ़िल्म में गाने का मौका दिया। शुक्राची चांदनी के बाद शेख मुख्तार ने हिंदी फ़िल्म मंगू में भी सुमन को मौका दिया। इस फ़िल्म के लिए सुमन कल्याणपुर की आवाज में तीन गाने रिकॉर्ड किए गए थे, लेकिन एक विवाद के चलते संगीतकार मोहम्मद शफ़ी उस फ़िल्म से हट गए और ओ.पी. नय्यर को मंगू का संगीत तैयार करने की ज़िम्मेदारी मिली, तो सुमन कल्याणपुर की गाई सिर्फ़ एक लोरी ही उस फ़िल्म में बची। वर्ष 1954 में गुरुदत्त ने अपनी फ़िल्म आर-पार में मौका दिया, किन्तु नियति का खेल यह रहा कि आर-पार के गीत 'मोहब्बत कर लो जी भर लो, अजी किसने रोका है' में संगीतकार ओ.पी. नय्यर ने इक्का-दुक्का लाइनें ही सुमन से गवाईं, बाकी यह गीत रफ़ी साहब व गीता दत्त से गवाया गया। इस पूरे गाने में वह बस एक कोरस गायिका ही बनकर रह गईं। वर्ष 1958 में मुंबई के एक बिजनेसमैन रामानंद कल्याणपुर से विवाह के बाद सुमन हेमाडी से सुमन कल्याणपुर बनीं। 1964 में नियति ने फिर खेल खेला। जिसे स्वयं सुमन कल्याणपुर ने अपने एक इंटरव्यू में बयां किया था। किस्सा यह है कि 1964 में मशहूर देशभक्ति गीत 'ए मेरे वतन के लोगों' को गाने के लिए सुमन कल्याणपुर का चयन हुआ। सुमन कल्याणपुर ने इस गीत और मौके की महत्ता को समझते हुए गाने की तैयारी भी कर ली। यहां तक कि प्रधानमंत्री नेहरू के सामने इसकी रिहर्सल भी हुई, लेकिन ऐन वक्त पर यह गीत लता मंगेशकर को दे दिया गया। इसी बीच लता मंगेशकर और मोहम्मद रफी के बीच रॉयल्टी विवाद के चलते साठ का दशक सुमन कल्याणपुर के लिए खूबसूरत समय बनकर आया। 'आजकल तेरे मेरे प्यार के चर्चे', 'ना ना करते प्यार तुम ही से', 'तुमने पुकारा और हम चले आए', 'परबतों के पेड़ों पर शाम का बसेरा है', 'दिल ने फिर याद किया', 'तुझको दिलबरी की कसम', 'चांद तकता है इधर' जैसे सैकड़ों सदाबहार गीत सुमन कल्याणपुर की झोली में आ गिरे। सुमन कल्याणपुर की आवाज लता मंगेशकर के काफी करीब थी, लेकिन उनकी आवाज की अपनी एक अलग रवानगी और खनक थी। फिर भी उनके गाए गीतों को सुनते ही अक्सर लोग मान लेते हैं कि यह तो लता गा रही हैं। उन्हें अक्सर 'द अदर लता' या 'दूसरी लता' कहा जाने लगा। यह दंश सुमन कल्याणपुर ने पूरे जीवन सहा।

उधर लता मंगेशकर और मोहम्मद रफी के बीच रॉयल्टी का विवाद समाप्त हुआ तो सुमन कल्याणपुर को काम मिलना कम होता गया। वर्ष 1981 में आई 'नसीब' फ़िल्म का गीत 'ज़िंदगी इम्तिहान लेती है' सुमन कल्याणपुर का आखिरी फ़िल्मी गीत साबित हुआ। 'नसीब' फ़िल्म के बाद सुमन कल्याणपुर को गाने के मौके मिले। लेकिन कभी ऐसा हुआ कि वे फ़िल्में ही रिलीज़ नहीं हुईं। यह भी हुआ कि सुमन जी की आवाज़ हटाकर किसी दूसरी गायिका से वे गाने गवा लिए गए।

वर्ष 2008 में सुमन कल्याणपुर के पति रामानंद कल्याणपुर के निधन के बाद सुमन कल्याणपुर ने सार्वजनिक कार्यक्रमों में शामिल होना लगभग बंद कर दिया था। पार्श्वगायन के अपने 28 साल के करिअर में सुमन कल्याणपुर ने एक से एक बेशकीमती, सदाबहार गाने गाकर एक सम्मानजनक स्थान बनाया। स्वर साधना व स्वर सिद्धि के आकाश में वे ऊंचाई पर थीं। लेकिन प्रतिस्पर्धा और राजनीति से भरी हुई फिल्मी दुनिया में 'द अदर लता' या 'दूसरी लता' कहलाने से वह आहत ज़रूर थीं। उनकी मधुर, रेशमी और शहद-सी मीठी आवाज़ सदैव उनकी याद दिलाती रहेगी।

प्रेरणा

जब सेवा बन जाए जीवन का उद्देश्य

दुनिया में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो अवसर मिलने पर अपनी स्थिति सुधारने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। बेहतर वेतन, बड़ा पद, अधिक सुविधाएं और सामाजिक प्रतिष्ठा अधिकांश लोगों के जीवन के प्रमुख लक्ष्य होते हैं। इसमें कुछ भी गलत नहीं है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने और अपने परिवार के लिए बेहतर जीवन चाहता है। लेकिन इतिहास में कुछ ऐसे भी व्यक्तित्व हुए हैं जिन्होंने व्यक्तिगत लाभ से ऊपर उठकर समाज के हित को प्राथमिकता दी। ऐसे लोगों ने यह सिद्ध किया कि जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य केवल स्वयं की उन्नति नहीं, बल्कि दूसरों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाना भी है। अमेरिकी वैज्ञानिक जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर का जीवन इसी विचारधारा का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर केवल एक वैज्ञानिक नहीं थे, बल्कि वे ऐसे चिंतक थे जो अपने ज्ञान को समाज की सेवा का माध्यम मानते थे। उन्होंने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा उन गरीब किसानों की सहायता में बिताया जो कठिन आर्थिक परिस्थितियों में संघर्ष कर रहे थे। उस समय अमेरिका के अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में किसान लगातार घटती उपज और खराब होती भूमि से परेशान थे। खेती उनके लिए जीवन का आधार थी, लेकिन परिस्थितियां ऐसी थीं कि मेहनत के बावजूद उन्हें पर्याप्त लाभ नहीं मिल पा रहा था।

कार्वर ने किसानों की समस्याओं को बहुत करीब से देखा था। उन्होंने महसूस किया कि यदि वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग सही तरीके से किया जाए तो किसानों के जीवन में बड़ा बदलाव लाया जा सकता है। इसी सोच के साथ उन्होंने कृषि अनुसंधान को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। उन्होंने मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने, नई फसलों को बढ़ावा देने और खेती को अधिक लाभदायक बनाने के लिए अनेक प्रयोग किए। उनके सुझावों ने हजारों किसानों को नई दिशा दी और उनके जीवन स्तर में सुधार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इसी दौरान एक प्रसिद्ध औद्योगिक कंपनी की नजर कार्वर की प्रतिभा पर पड़ी। कंपनी ने उन्हें अपने साथ जुड़ने का प्रस्ताव दिया। यह साधारण प्रस्ताव नहीं था। इसके साथ अत्यधिक वेतन, आधुनिक अनुसंधान सुविधाएं और राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलने का अवसर जुड़ा हुआ था। कंपनी के प्रतिनिधियों को विश्वास था कि कोई भी वैज्ञानिक ऐसा अवसर हाथ से नहीं जाने देगा।

प्रतिनिधि कार्वर से मिलने पहुंचे और उन्होंने विस्तार से प्रस्ताव की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कंपनी में शामिल होने पर उन्हें आर्थिक रूप से किसी प्रकार की चिंता नहीं रहेगी। उन्हें अत्याधुनिक प्रयोगशालाएं, अनुभवी सहयोगी और बड़े स्तर पर शोध करने के अवसर प्राप्त होंगे। बाहरी दृष्टि से देखा जाए तो यह किसी भी वैज्ञानिक के लिए आदर्श स्थिति थी।

कार्वर ने पूरी बात ध्यानपूर्वक सुनी। वे प्रस्ताव की महत्ता को समझते थे। वे जानते थे कि यह उनके जीवन को अधिक आरामदायक और सुरक्षित बना सकता है। लेकिन उनके मन में एक अलग प्रश्न उठ रहा था। उन्होंने प्रतिनिधियों से पूछा कि यदि वे कंपनी में शामिल हो जाएं, तो क्या वे उन किसानों के लिए अपना कार्य जारी रख पाएंगे जिनके साथ वे वर्षों से जुड़े हुए हैं।

प्रतिनिधियों ने स्पष्ट किया कि कंपनी में उनकी प्राथमिक जिम्मेदारी व्यावसायिक अनुसंधान होगी। उनका अधिकांश समय कंपनी की परियोजनाओं में लगेगा। किसानों के लिए काम करने की स्वतंत्रता पहले जैसी नहीं रह पाएगी।

यह उत्तर सुनकर कार्वर गहरे विचार में डूब गए। उनके सामने दो रास्ते थे। पहला रास्ता व्यक्तिगत सफलता, आर्थिक समृद्धि और सुविधाओं से भरा हुआ था। दूसरा रास्ता संघर्षपूर्ण था, लेकिन उससे हजारों किसानों का भविष्य जुड़ा हुआ था। उन्होंने कुछ क्षणों के लिए अपने जीवन के उद्देश्य पर विचार किया। उन्हें याद आया कि उन्होंने विज्ञान को इसलिए नहीं चुना था कि वे केवल स्वयं सफल बनें, बल्कि इसलिए चुना था कि वे समाज की समस्याओं का समाधान खोज सकें।

कुछ देर बाद उन्होंने शांत स्वर में कहा, "आपका प्रस्ताव बहुत आकर्षक है, लेकिन मेरा काम अभी यहां समाप्त नहीं हुआ है।" उनका उत्तर सुनकर प्रतिनिधि चकित रह गए। उनके लिए यह समझना कठिन था कि कोई व्यक्ति इतनी बड़ी आर्थिक संभावना को क्यों ठुकरा सकता है। लेकिन कार्वर के लिए धन से अधिक महत्वपूर्ण वह कार्य था जिसके माध्यम से वे लोगों के जीवन में बदलाव ला रहे थे।

यह निर्णय केवल एक नौकरी को अस्वीकार करने का निर्णय नहीं था। यह उनके जीवन दर्शन का प्रतिबिंब था। वे मानते थे कि किसी भी व्यक्ति की योग्यता का सर्वोत्तम उपयोग वहीं होता है जहां उसकी सबसे अधिक आवश्यकता हो। यदि उनका ज्ञान किसानों के जीवन को बेहतर बना सकता था, तो वही उनके लिए सबसे बड़ा पुरस्कार था।

समय बीतता गया और कार्वर अपने कार्य में लगे रहे। उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण कृषि खोजें कीं और किसानों को नई संभावनाओं से परिचित कराया। उनके प्रयासों ने हजारों परिवारों को गरीबी और निराशा से बाहर निकलने में सहायता की। उनके योगदान का प्रभाव केवल खेतों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने पूरे समाज को प्रभावित किया।

बाद में जब एक पत्रकार ने उनसे पूछा कि उन्होंने इतना बड़ा अवसर क्यों ठुकरा दिया था, तो उन्होंने जो उत्तर दिया, वह आज भी प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि जीवन में यह अधिक महत्वपूर्ण है कि हम किस काम के लिए आवश्यक हैं, न कि हमारे पास कितना धन है।

यह विचार आधुनिक समाज के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है। आज सफलता की परिभाषा अक्सर धन, पद और प्रसिद्धि के आधार पर तय की जाती है। लोग अपनी उपलब्धियों की तुलना दूसरों से करते हैं और अधिक पाने की दौड़ में लगे रहते हैं। लेकिन इस प्रक्रिया में वे कभी-कभी यह भूल जाते हैं कि उनकी क्षमताएं समाज के लिए कितनी उपयोगी हो सकती हैं।

सच्ची संतुष्टि केवल भौतिक उपलब्धियों से नहीं मिलती। वह तब प्राप्त होती है जब व्यक्ति यह महसूस करता है कि उसके कार्यों ने किसी अन्य के जीवन को बेहतर बनाया है। एक शिक्षक तब संतुष्ट होता है जब उसके विद्यार्थी सफल होते हैं। एक चिकित्सक तब संतोष महसूस करता है जब उसके उपचार से रोगी स्वस्थ होता है। इसी प्रकार एक वैज्ञानिक तब वास्तविक सफलता प्राप्त करता है जब उसका ज्ञान समाज के लिए उपयोगी सिद्ध होता है।

रचनात्मक बहस के बजाय सतही नारेबाजी

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने बीते दिनों जब प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को 'देशद्रोही' कहा, तो यह साधारण राजनीतिक आरोप नहीं था। देशद्रोह का यह आरोप इतना संगीन है कि सीधे प्रतिपक्ष की गंभीरता पर सवाल खड़े करता है। राहुल गांधी को यह बताना चाहिए कि देश के शीर्ष कार्यकारी पदों और एक बड़े सामाजिक संगठन पर लगाए गए इस गंभीर आरोप का प्रामाणिक आधार क्या है? यदि देशद्रोह का आरोप लगाया गया है, तो उसके समर्थन में तथ्य भी सामने आने चाहिए। अन्यथा यह राजनीतिक असहमति नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक विमर्श के स्तर को गिराने वाली बयानबाजी मानी जाएगी। संवैधानिक मर्यादा के इसी क्षरण के संदर्भ में 25 नवंबर, 1949 को संविधान सभा में दिया गया बाबासाहेब आंबेडकर का अंतिम भाषण याद आता है।

उन्होंने सचेत किया था कि जब अपनी बात रखने और सरकार बदलने के शांतिपूर्ण मार्ग उपलब्ध हों, तब अमर्यादित भाषा और असंवैधानिक तौर-तरीकों का आश्रय लेना 'अराजकता का व्याकरण' बन जाता है। दुर्भाग्य से, विपक्ष का एक वर्ग ऐसी भाषा और शैली को अपनी राजनीतिक कार्यशैली का हिस्सा बनाता दिखाई देता है। लोकतंत्र में तीखी आलोचना सत्ता को निरंकुश होने से रोकती है, परंतु जब आलोचना का स्थान व्यक्तिगत घृणा ले ले, तो संवाद का रास्ता बंद हो जाता है। देश के सर्वोच्च कार्यकारी पदों पर बैठे जनप्रतिनिधियों के लिए ऐसी शब्दावली का प्रयोग न केवल उस विशाल जनादेश का अवमूल्यन है जिसने उन्हें चुना है, बल्कि यह हमारी समूची लोकतांत्रिक व्यवस्था की वैधता को ही कठघरे में खड़ा करता है।

विपक्ष द्वारा लगातार यह विमर्श गढ़ा जा रहा है कि वर्तमान सत्ता 'संविधान को खत्म' कर रही है। संविधान पर आघात की पड़ताल करने से तथ्य स्वयं अपनी कहानी कह देंगे। याद कीजिए जून 1975 का वह दौर जब बिना किसी विधिवत कैबिनेट बैठक के देश पर आपातकाल थोपा गया था। विपक्षी नेताओं को जेलों में डालना, प्रेस पर सेंसरशिप लगाना और नागरिकों के मौलिक अधिकारों को निलंबित करना संवैधानिक ढांचे का विध्वंस था। बिना विपक्ष की मौजूदगी के संसद के भीतर 42वां संविधान संशोधन पारित कर संविधान की मूल प्रस्तावना को बदला गया था।

वर्तमान में संसद के भीतर हर विधेयक पर बहस होती है, मत विभाजन की लोकतांत्रिक प्रक्रिया अपनाई जाती है और सर्वोच्च अदालत कानूनों की न्यायिक समीक्षा करने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र है। जहां तक संविधान के सम्मान और जन-जागरूकता का प्रश्न है, वर्तमान सरकार ने संविधान के प्रति जागरूकता बढ़ाने, उसके मूल्यों को समाज तक पहुंचाने और लोकतांत्रिक चेतना को सशक्त करने के लिए निरंतर संस्थागत प्रयास किए गए हैं। संविधान शिल्पी बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर के जीवन से जुड़े पांच महत्वपूर्ण स्थानों को 'पंचतीर्थ' के रूप में भी इसी सरकार ने विकसित किया। राजा सुहेलदेव से लेकर वीरा पासी तक, वंचित समाज के नायकों को जो सांस्कृतिक सम्मान आज मिल रहा है, उससे समाज के अनेक वंचित वर्गों में आत्मगौरव और सांस्कृतिक पहचान की भावना को बल मिला है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और महात्मा गांधी के अंतर्संबंधों को लेकर भी विपक्ष का विमर्श हमेशा एकांगी और ऐतिहासिक तथ्यों से परे दिखाई देता है। गांधीजी मानते थे कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए ग्राम विकास, स्वदेशी अर्थव्यवस्था, स्वच्छता और अस्पृश्यता उन्मूलन जैसे बुनियादी सामाजिक कार्यों को जीवनशैली बनाना होगा। आजादी के बाद सत्ता संभालने वाले तंत्र ने गांधी के इस रचनात्मक माडल को पीछे छोड़ दिया, जबकि संघ ने राजनीति से अलग रहकर गांधी के इन सेवापरक कार्यों को अपने संगठन का मूल आधार बनाया। आज वनवासी कल्याण आश्रम के माध्यम से आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा का प्रसार और सुदूर गांवों में चल रहे 'एकल विद्यालय' महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा के विचार के ही व्यावहारिक रूप हैं। महात्मा गांधी ने 1934 में वर्धा के पास संघ के एक शिविर का प्रत्यक्ष दौरा किया था और वहां जातिगत भेदभाव की पूर्ण अनुपस्थिति की सराहना की थी। अतः संघ को गांधी के विचारों का विरोधी बताना व्यावहारिक यथार्थ की कसौटी पर निराधार सिद्ध होता है।

डा. आंबेडकर का मानना था कि वास्तविक सशक्तीकरण वित्तीय समावेशन से आता है। डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर के माध्यम से बिचौलियों की पुरानी संस्कृति को खत्म करके सीधे निर्धन नागरिकों के बैंक खातों में मदद पहुंचाना, यूपीआइ तकनीक द्वारा छोटे व्यापारियों को मुख्यधारा से जोड़ना और मुद्रा ऋणों के जरिये करोड़ों वंचित युवाओं को उद्यमी बनाना इसी दौर में संभव हुआ है। इन आर्थिक वास्तविकताओं को समझे बिना केवल सतही नारा गढ़ने से कोई रचनात्मक आर्थिक बहस संभव नहीं है। विपक्ष अपनी राजनीतिक हताशा में जिस आक्रामक शैली को अपना रहा है, उसका सबसे बड़ा नुकसान देश की लोकतांत्रिक संस्थाओं को हो रहा है। जब न्यायपालिका, चुनाव आयोग, सरकार और संसद की पूरी प्रक्रिया पर लगातार आधारहीन सवाल उठाए जाते हैं, तो इससे भारतीय राज्य की साख ही कमजोर होती है। लोकतंत्र केवल चुनाव जीतने या हारने का नाम नहीं है, यह उन संस्थाओं के प्रति जनता के विश्वास पर टिका होता है, जो इस व्यवस्था का संचालन करती हैं। यदि देश का नागरिक यह मानने लगेगा कि उसकी हर संस्था बिकी हुई या पक्षपाती है, तो वह व्यवस्था के प्रति उदासीन हो जाएगा। इसके दुष्परिणाम विपक्ष को भी भोगने पड़ेंगे और देश एक स्थायी राजनीतिक अस्थिरता में फंस जाएगा।

अभियान

केदारनाथ का रहस्यः शिव के दिव्य स्वरूप, पंचकेदार और त्रिकोणीय ज्योतिर्लिंग की अद्भुत

हिमालय की बर्फ से आच्छादित चोटियों के मध्य स्थित केदारनाथ धाम केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था, विश्वास और आध्यात्मिक चेतना का केंद्र है। उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में समुद्र तल से लगभग 3,583 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह पवित्र धाम भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक माना जाता है। प्रत्येक वर्ष लाखों श्रद्धालु कठिन पर्वतीय यात्रा करके बाबा केदार के दर्शन के लिए यहां पहुंचते हैं। माना जाता है कि केदारनाथ के दर्शन मात्र से मनुष्य के अनेक जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं और उसे आध्यात्मिक शांति प्राप्त होती है।

केदारनाथ धाम की सबसे बड़ी विशेषता यहां स्थापित स्वयंभू शिवलिंग है। यह शिवलिंग सामान्य गोलाकार या बेलनाकार स्वरूप में नहीं है, बल्कि इसका आकार त्रिकोणीय अथवा त्रिभुजाकार है। यही कारण है कि यह ज्योतिर्लिंग अन्य सभी ज्योतिर्लिंगों से अलग और विशिष्ट माना जाता है। इस अनोखे स्वरूप के पीछे एक अत्यंत रोचक पौराणिक कथा जुड़ी हुई है, जिसका संबंध सीधे महाभारत काल और पांडवों से बताया जाता है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार महाभारत का युद्ध समाप्त होने के बाद पांडवों को अपने ही परिजनों, गुरुजनों और कुल के लोगों की मृत्यु का गहरा पश्चाताप होने लगा। यद्यपि उन्होंने धर्म की स्थापना के लिए युद्ध किया था, फिर भी उन्हें यह अहसास था कि इतने बड़े रक्तपात का दोष उनके सिर पर है। वे इस पाप से मुक्ति पाने के लिए भगवान शिव का आशीर्वाद और क्षमा प्राप्त करना चाहते थे।

पांडव सबसे पहले काशी पहुंचे, जहां उन्होंने भगवान शिव की आराधना की। लेकिन भगवान शिव उनसे प्रसन्न नहीं थे। उन्हें लगा कि युद्ध में हुई व्यापक विनाशलीला के लिए पांडव भी जिम्मेदार हैं। इसलिए उन्होंने पांडवों को सीधे दर्शन देने से इनकार कर दिया और काशी छोड़कर हिमालय की ओर चले गए।

जब पांडवों को यह पता चला कि भगवान शिव हिमालय में हैं, तो वे भी उनकी खोज में निकल पड़े। लंबी यात्रा के बाद वे हिमालय क्षेत्र में पहुंचे, जहां भगवान शिव ने स्वयं को छिपाने के लिए बैल अर्थात नंदी का रूप धारण कर लिया। शिवजी अन्य पशुओं के बीच जाकर रहने लगे ताकि पांडव उन्हें पहचान न सकें।

लेकिन भीम अत्यंत बलशाली और बुद्धिमान थे। उन्होंने पशुओं के झुंड में एक असाधारण बैल को देखा और उन्हें संदेह हुआ कि यह कोई साधारण बैल नहीं हो सकता। भीम ने अपनी विशाल देह फैलाकर दो पर्वतों के बीच खड़े होकर सभी पशुओं को गुजरने का मार्ग दिया। अधिकांश पशु निकल गए, लेकिन एक बैल अचानक धरती में समाने लगा। भीम समझ गए कि यही भगवान शिव हैं।

उन्होंने उस बैल को पकड़ने का प्रयास किया, लेकिन तब तक बैल का अधिकांश भाग धरती के भीतर समा चुका था। केवल उसका पृष्ठभाग अर्थात पीठ का हिस्सा धरती के ऊपर रह गया। यही भाग बाद में केदारनाथ में त्रिकोणीय शिवलिंग के रूप में प्रकट हुआ। कहा जाता है कि बैल के शरीर के अन्य अंग विभिन्न स्थानों पर प्रकट हुए, जो आगे चलकर पंचकेदार के नाम से प्रसिद्ध हुए।

पंचकेदार की परंपरा हिंदू धर्म में विशेष महत्व रखती है। मान्यता है कि बैल का पृष्ठभाग केदारनाथ में प्रकट हुआ, भुजाएं तुंगनाथ में, मुख रुद्रनाथ में, नाभि मदमहेश्वर में और जटाएं कल्पेश्वर में प्रकट हुईं। इन पांचों स्थलों को मिलाकर पंचकेदार कहा जाता है। आज भी अनेक श्रद्धालु पंचकेदार यात्रा को अत्यंत पुण्यदायी मानते हैं।

केदारनाथ के त्रिकोणीय शिवलिंग का स्वरूप केवल एक पौराणिक घटना का प्रतीक नहीं है, बल्कि इसके भीतर गहरा आध्यात्मिक संदेश भी छिपा हुआ है। कई विद्वान और संत मानते हैं कि त्रिकोण सृष्टि के तीन प्रमुख तत्वों का प्रतिनिधित्व करता है। यह ब्रह्मा, विष्णु और महेश अर्थात त्रिदेवों का प्रतीक माना जाता है। वहीं कुछ विद्वानों के अनुसार यह सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों का भी प्रतिनिधित्व करता है, जिनसे समस्त सृष्टि संचालित होती है।

त्रिभुज का आध्यात्मिक महत्व भारतीय दर्शन में अत्यंत गहरा माना गया है। योग और तंत्र परंपरा में त्रिकोण को ऊर्जा, संतुलन और सृजन का प्रतीक माना जाता है। ऊपर की ओर उठता हुआ त्रिकोण चेतना की ऊर्ध्वगामी यात्रा का संकेत देता है। यही कारण है कि केदारनाथ का त्रिकोणीय शिवलिंग केवल एक धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक जागरण का भी प्रतीक माना जाता है।

स्कंद पुराण के केदारखंड में भी केदारनाथ की महिमा का विस्तृत वर्णन मिलता है। इसमें बताया गया है कि जो भक्त श्रद्धा और भक्ति के साथ केदारनाथ की यात्रा करता है, उसे भगवान शिव का विशेष आशीर्वाद प्राप्त होता है। केदारखंड में इस क्षेत्र को देवताओं, ऋषियों और सिद्ध पुरुषों की तपोभूमि बताया गया है। मान्यता है कि यहां की प्रत्येक शिला और प्रत्येक पर्वत भगवान शिव की दिव्य उपस्थिति का अनुभव कराते हैं।

केदारनाथ मंदिर की वास्तुकला भी अपने आप में अद्भुत है। माना जाता है कि वर्तमान मंदिर का निर्माण लगभग आठवीं शताब्दी में जगद्गुरु आदि शंकराचार्य ने करवाया था। हालांकि कई इतिहासकार यह भी मानते हैं कि इस स्थान पर प्राचीन काल से पूजा-अर्चना होती रही थी और बाद में मंदिर का पुनर्निर्माण एवं विस्तार किया गया।

विशाल पत्थरों से निर्मित यह मंदिर हिमालय की कठोर जलवायु और प्राकृतिक चुनौतियों के बावजूद आज भी मजबूती से खड़ा है। वर्ष 2013 में उत्तराखंड में आई भीषण आपदा के दौरान आसपास का क्षेत्र भारी विनाश का शिकार हुआ, लेकिन केदारनाथ मंदिर अपेक्षाकृत सुरक्षित रहा। इस घटना को अनेक श्रद्धालु भगवान शिव की कृपा और मंदिर की दिव्य शक्ति का प्रमाण मानते हैं।

मंदिर के मुख्य द्वार पर स्थित विशाल नंदी प्रतिमा श्रद्धालुओं का विशेष ध्यान आकर्षित करती है। नंदी भगवान शिव के परम भक्त और उनके वाहन माने जाते हैं। शिव दर्शन से पहले नंदी के दर्शन करने की परंपरा आज भी निभाई जाती है। माना जाता है कि नंदी भक्तों की प्रार्थना सीधे भगवान शिव तक पहुंचाते हैं।

केदारनाथ यात्रा केवल धार्मिक यात्रा नहीं है, बल्कि आत्मिक अनुभव की यात्रा भी मानी जाती है। कठिन पर्वतीय मार्ग, ऊंचे-ऊंचे पहाड़, मंदाकिनी नदी की कलकल ध्वनि और हिमालय की दिव्यता श्रद्धालुओं के मन को एक अलग ही आध्यात्मिक अनुभूति प्रदान करती है। जब भक्त मंदिर परिसर में पहुंचकर त्रिकोणीय शिवलिंग के दर्शन करता है, तो उसे ऐसा अनुभव होता है मानो वह सांसारिक चिंताओं से मुक्त होकर ईश्वर के निकट पहुंच गया हो।

हर वर्ष अप्रैल या मई में मंदिर के कपाट खुलते हैं और दीपावली के बाद नवंबर में शीतकाल के लिए बंद कर दिए जाते हैं। शीतकाल में भगवान केदारनाथ की उत्सव डोली ऊखीमठ ले जाई जाती है, जहां उनकी पूजा जारी रहती है। कपाट खुलने के साथ ही देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु बाबा केदार के दर्शन के लिए पहुंचते हैं।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार केदारनाथ के दर्शन और पूजा-अर्चना से व्यक्ति के पाप नष्ट होते हैं तथा उसे मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। यही कारण है कि यह धाम हिंदू धर्म के सबसे पवित्र तीर्थस्थलों में गिना जाता है।

केदारनाथ का त्रिकोणीय शिवलिंग केवल एक पत्थर या धार्मिक प्रतीक नहीं है। यह महाभारत की कथा, भगवान शिव की लीला, पांडवों के पश्चाताप, पंचकेदार की परंपरा और भारतीय आध्यात्मिक दर्शन का जीवंत संगम है। यह हमें याद दिलाता है कि अहंकार, पाप और भ्रम से मुक्ति का मार्ग केवल सच्ची श्रद्धा, भक्ति और आत्मसमर्पण से ही संभव है।

आज भी जब कोई श्रद्धालु हिमालय की ऊंचाइयों को पार करके बाबा केदार के चरणों में पहुंचता है और उस दिव्य त्रिकोणीय शिवलिंग के दर्शन करता है, तो उसे केवल एक मंदिर नहीं दिखाई देता, बल्कि हजारों वर्षों से चली आ रही आस्था, तपस्या और दिव्यता की अद्भुत परंपरा का साक्षात्कार होता है। यही कारण है कि केदारनाथ धाम सदियों से श्रद्धा का केंद्र बना हुआ है और आने वाली पीढ़ियों के लिए भी आध्यात्मिक प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

PRGI NO. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

‘लोकल से ग्लोबल’ की सशक्त उड़ान : गुजरात सरकार की हस्तकला सेतु योजना बनी परंपरागत कला-कारीगरी के लिए मजबूत प्रोत्साहन का सेतु

▸▸ हस्तकला सेतु योजना अंतर्गत 102.08 करोड़ रुपए की बिक्री, 50,000 से अधिक रोजगार का सृजन
▸▸ योजनांतर्गत 21,690 से अधिक कारीगरों का पंजीकरण, जिनमें 82 प्रतिशत महिलाएँ
▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन को भली-भाँति आगे बढ़ा रहे मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

गांधीनगर, 02 जून : गुजरात की समृद्ध हस्तकला परंपरा की सदियों से देश-विदेश में अपनी विशिष्ट पहचान है। बदलते आर्थिक परिप्रेक्ष्य तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा के समय में इन कारीगरों को सशक्त बनाना समय की बड़ी आवश्यकता बनी है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भी ‘विकास भी, विरासत भी’, ‘आत्मनिर्भर भारत’, ‘वोकल फॉर लोकल’ जैसे मंत्रों द्वारा परंपरागत कला विरासत को अधिक से अधिक प्रोत्साहन देने का विजन दिया है और गुजरात में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल इस विजन को भली-भाँति आगे बढ़ा रहे हैं।

प्रधानमंत्री के इसी विजन तथा परंपरागत कला विरासत की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात सरकार ने वर्ष 2020 में ‘हस्तकला सेतु योजना’ (एचएसवाई) शुरू की थी, जो आज कला-कारीगरों के लिए मजबूत आर्थिक प्रोत्साहन का सेतु सिद्ध हुई है।

हस्तकला सेतु योजना पर गुजरात सरकार द्वारा 58 करोड़ रुपए का खर्च

गुजरात में हस्तकला सेतु योजना का प्रभावी क्रियान्वयन किया गया है, जिसके कारण राज्य के हजारों कारीगरों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया है। इस योजना का क्रियान्वयन कुटीर एवं ग्रामोद्योग आयुक्त के अधीनस्थ इंडस्ट्रियल एक्सटेंशन-कॉटेज (इंडेक्स्ट-सी) द्वारा किया जा रहा है, जबकि भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (ईडीआईआई) ने इस योजना में नॉलेज पार्टनर के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शुरुआत में यह योजना 2019-20 से तीन वर्ष के लिए प्रस्तावित थी, परंतु कोविड-19 महामारी के चलते इसे 2025-26 तक विस्तृत किया गया। इस योजना पर राज्य सरकार द्वारा लगभग 58 करोड़ रुपए खर्च किए गए हैं।

इस योजना की सबसे बड़ी विशेषता इसका विशाल दायरा है। यह योजना गुजरात के सभी 34 जिलों में लागू की गई है। योजनांतर्गत अब तक 21,690 से अधिक कारीगरों का पंजीकरण किया गया है, जिनमें 82 प्रतिशत महिलाएँ हैं। सामाजिक समावेशिता की दृष्टि से भी यह योजना महत्वपूर्ण है, कारण कि लाभार्थियों में 21 प्रतिशत अनुसूचित जाति, 20 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति तथा 34 प्रतिशत अन्य पिछड़ा वर्ग के कारीगर शामिल हैं।

15 हजार से अधिक कारीगरों को उद्यमिता प्रशिक्षण, 70 से अधिक मास्टर ट्रेनर्स तथा 150 से अधिक मेंटर्स का नेटवर्क

हस्तकला सेतु योजनांतर्गत कारीगरों को केवल आर्थिक सहायता ही नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर बनाने के लिए व्यापक प्रशिक्षण भी दिया गया है। 15,586 कारीगरों को उद्यमिता विकास प्रशिक्षण दिया गया है, जबकि 9,292 कारीगरों को उनके क्षेत्र से जुड़ा विशिष्ट कौशल प्रशिक्षण मिला है। इसके अतिरिक्त; 70 से अधिक मास्टर ट्रेनर्स तथा 150 से अधिक मेंटर्स का नेटवर्क तैयार किया गया है, जो कारीगरों को निरंतर मार्गदर्शन दे रहा है।

9,300 कारीगरों को बीटूबी ऑर्डर द्वारा सीधे बाजार से जोड़ा गया, 102.08 करोड़ रुपए की कुल बिक्री दर्ज हुई

बाजार के साथ कनेक्टिविटी इस योजना का सबसे मजबूत पहलू है। लगभग 9,300 कारीगरों को बीटूबी ऑर्डर द्वारा सीधे बाजार से जोड़ा गया है। इसके अलावा; 7 बीटूबी मीट तथा 4 फैशन शो द्वारा कारीगरों एवं डिजाइनरों के बीच सुदृढ़ संवाद स्थापित हुआ है। डिजिटल युग के अनुरूप 2,000 से अधिक कारीगरों को डिजिटल मार्केटिंग का प्रशिक्षण देकर उन्हें अमेजन, फ्लिपकार्ट समर्थ, मीशो तथा इट्सी जैसे ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर जोड़ा गया है।

इस योजना का आर्थिक प्रभाव भी बहुत प्रभावशाली रहा है। योजनांतर्गत अब तक 102.08 करोड़ रुपए की कुल बिक्री दर्ज हुई है और 50,000 से अधिक नए रोजगार के अवसर सृजित हुए हैं। साथ ही; मौजूदा 5,900 से अधिक कारीगरों को अतिरिक्त सहायता एवं मार्गदर्शन मिला है।

योजनांतर्गत आय अर्जित करने वाले कला-कारीगरों की संख्या 9 प्रतिशत से बढ़कर 50 प्रतिशत तक पहुँची

यदि कारीगरों की आय की बात करें, तो हस्तकला सेवा सेतु योजना से पहले केवल 9 प्रतशत कारीगर ही 15,000 रुपए से अधिक मासिक आय अर्जित कर पाते थे, जबकि आज यह आँकड़ा 50 प्रतिशत तक बढ़ गया है। हस्तकला को आय के मुख्य स्रोत के रूप में अपनाने वाले कारीगरों की संख्या भी 20 प्रतिशत से बढ़कर 45 प्रतिशत हो गई है। इसके अलावा; 73 प्रतिशत कारीगर अब प्रदर्शनियों तथा मेलों द्वारा सीधे बाजार तक पहुँच बना रहे हैं।

यद्यपि योजना के सफल क्रियान्वयन के दौरान कुछ चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा। इनमें दस्तावेजों का अभाव, वित्तीय समन्वय में विलंब, आधुनिक टेक्नोलॉजी अपनाने में संकोच तथा प्रभावी मार्केटिंग तंत्र का अभाव प्रमुख हैं, परंतु गुजरात सरकार ने इन चुनौतियों को दूर करने के लिए टेक्नोलॉजी अपग्रेडेशन, डिजाइन नवीनता, बाजार विविधता तथा सार्वजनिक-निजी भागीदारी को प्राथमिकता दी। हस्तकला सेतु योजना केवल एक सरकारी योजना नहीं है, बल्कि कारीगरों के जीवन में परिवर्तन लाने वाली एक क्रांतिकारी पहल बनी है। इस योजना ने केवल रोजगार सृजन ही नहीं किया, बल्कि गुजरात की सांस्कृतिक विरासत को वैश्विक मंच पर नई पहचान दिलाई है। ‘लोकल टू ग्लोबल’ की ओर यह कदम भारत को आत्मनिर्भर बनाने के सपने को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने मांजलपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री योगेशभाई पटेल के निधन पर गहरा शोक और दुःख व्यक्त किया

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने मांजलपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री योगेशभाई पटेल के निधन पर गहरा शोक और दुःख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री ने दिवंगत योगेशभाई को स्मरण करते हुए कहा कि उन्होंने जनप्रतिनिधि के रूप में राष्ट्रसेवा और जनसेवा के कार्यों में निरंतर कर्तव्यनिष्ठ रहकर आम जनता के हृदय में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया था। उन्होंने परम कृपालु परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवंगत योगेशभाई की आत्मा को शांति प्रदान करें तथा शोकसंतप्त परिवार और उनके समर्थकों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल का शानदार प्रदर्शन: मई 2026 में 688 करोड़ का रिकॉर्ड राजस्व, यात्री और मालभाड़ा आय में भारी उछाल

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल ने मई 2026 के दौरान विभिन्न वाणिज्यिक क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए राजस्व अर्जन, माल परिवहन, यात्री सुविधाओं के विस्तार तथा गैर-किराया आय के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियां अर्जित की हैं। मंडल ने इस महीने लगभग 688 करोड़ का सकल राजस्व (Gross Revenue) अर्जित किया है, जो पिछले वर्ष मई 2025 की तुलना में 7.01% अधिक है।

राजस्व के मुख्य आंकड़े:

▸▸ यात्री राजस्व (Passenger Revenue): 22.68% की भारी बढ़ोतरी के साथ 144.95 करोड़ दर्ज किया गया, जो पिछले साल मई में 118.15 करोड़ था।

▸▸ अन्य कोचिंग राजस्व (Other Coaching Revenue): पिछले वर्ष के 16.47 करोड़ से 52.40% बढ़कर 25.10 करोड़ तक पहुंच गया।

▸▸ मालभाड़ा राजस्व (Goods Revenue): मई 2026 में 517.34 करोड़ रहा, जिसमें पिछले साल (507.72 करोड़) की तुलना में लगभग 2% की वृद्धि देखी गई।

▸▸ यात्रियों की संख्या: प्रारंभिक यात्रियों की संख्या (No. of Orig. Passengers) 12.67% बढ़कर 34.15 लाख हो गई।

मालभाड़े (Freight) में ऐतिहासिक रिकॉर्ड:

अहमदाबाद मंडल के कई प्रमुख टर्मिनलों और साइडिंग्स ने अब तक का अपना सबसे सर्वश्रेष्ठ मासिक मालभाड़ा राजस्व दर्ज किया है:

▸▸ देशलपर (DSLP) फ्रेट टर्मिनल: 13.40 करोड़ का अब तक का सर्वश्रेष्ठ राजस्व हासिल किया।

▸▸ इफ्को (IFFCO) साइडिंग खोडियार: 9.98 करोड़ का रिकॉर्ड राजस्व दर्ज किया।

▸▸ सानोसरा (SNSR) फ्रेट टर्मिनल: 10.75 करोड़ का अपना सर्वकालिक सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया ।

▸▸ बेंटोनाइट लोडिंग (Bentonite Loading): बेंटोनाइट की लोडिंग से मंडल को 24.29 करोड़ का ऐतिहासिक मासिक राजस्व प्राप्त हुआ।

▸▸ बिजनेस डेवलपमेंट यूनिट (BDU) के विशेष प्रयास:

मंडल की बिजनेस डेवलपमेंट यूनिट (BDU) ने नए ग्राहकों, गंतव्यों और नई सामग्रियों को जोड़कर राजस्व बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है:

▸▸ नई सामग्री: आईटीसी लिमिटेड द्वारा कांडला पोर्ट से पोल्लाची जंक्शन तक ‘सोयाबीन एक्सट्रैक्शन और फ्लेक्स’ की पहली मिनी रेक लोड की गई, जिससे 42.06 लाख का अतिरिक्त राजस्व मिला।

▸▸ नए ग्राहक: मेसर्स मैग्नस माइंस एंड मिनरल्स लिमिटेड ने सानोसरा से भूषण पावर एंड स्टील लिमिटेड की निजी साइडिंग तक बेंटोनाइट की रेक भेजकर 1.07 करोड़ का राजस्व उत्पन्न किया ।

▸▸ औद्योगिक नमक, बेंटोनाइट और जैविक खाद जैसी सामग्रियों को देश के विभिन्न डिवीजनों (जैसे वडोदरा, भावनगर, सिकंदराबाद, कोटा, पुणे, जम्मू और खुर्दा रोड) के नए गंतव्यों तक सफलतापूर्व भेजा गया ।

नॉन-फेयर रेवेन्यू (NFR) और पार्सल में नवाचार:

▸▸ गेम जोन अनुबंध: महेसाणा (MSH) स्टेशन पर 454 वर्ग मीटर क्षेत्र में पांच वर्षों के लिए ‘गेम जोन’ के विकास और संचालन का ई-ऑक्शन कॉन्ट्रैक्ट सफलतापूर्वक आवंटित किया गया, जिससे 44.25 लाख का राजस्व मिलेगा ।

▸▸ पार्सल ई-ऑक्शन: मई महीने में आयोजित ई-ऑक्शन के माध्यम से 11 पार्सल संपत्तियों को तीन साल के लिए लीज पर दिया गया, जिससे 20.08 करोड़ का कुल राजस्व प्राप्त होने की उम्मीद है ।

▸▸ मसालों की पार्सल रेक: महेसाणा से अज़ारा और ऊंझा से मिर्ज़ा के लिए मसालों की पहली पार्सल रेक चलाई गईं, जिससे क्रमशः 24.79 लाख और 27.15 लाख का राजस्व मिला।

यात्री सुविधाओं के विस्तार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम

▸▸ ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान यात्रियों की अतिरिक्त मांग को पूरा करने हेतु 33 विशेष ट्रेन यात्राओं का संचालन किया गया तथा 43 अतिरिक्त कोच लगाए गए।

▸▸ इन प्रयासों से लगभग 0.55 लाख यात्रियों को सुविधा प्रदान की गई तथा 6.79 करोड़ का अतिरिक्त यात्री राजस्व अर्जित हुआ।

भुज-दिल्ली एक्सप्रेस का शुभारंभ: 22 मई 2026 को माननीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव और गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्रभाई पटेल ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जालौर-पाली मारवाड़ के रास्ते पहली बार ‘भुज से भुज-दिल्ली एक्सप्रेस’ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया, जिससे कच्छ और देश की राजधानी के बीच कनेक्टिविटी मजबूत हुई है । टिकट चेकिंग और स्वच्छता अभियान: बिना टिकट और अनियमित यात्रा पर अंकुश लगाने के लिए विभिन्न स्टेशनों पर विशेष (Fortress) जांच अभियान चलाए गए, जिससे मई महीने में लगभग 3.00 करोड़ की टिकट चेकिंग आय होने की उम्मीद है। इसके अतिरिक्त, स्टेशनों पर गंदगी फैलाने और थूकने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करते हुए एंटी-लिटरिन्ग मामलों के तहत 1.38 लाख का जुर्माना वसूल किया गया।

चलती ट्रेन में गूंजी किलकारी! जबलपुर-सोमनाथ एक्सप्रेस में महिला ने बच्चे को दिया जन्म, मां एवं नवजात दोनों सुरक्षित

भारतीय रेल की यात्री सेवा एवं मानवीय संवेदनशीलता का एक प्रेरणादायक उदाहरण उस समय देखने को मिला, जब गाड़ी संख्या 11466 जबलपुर–सोमनाथ एक्सप्रेस में यात्रा कर रही एक गर्भवती महिला ने चलती ट्रेन में ही एक स्वस्थ बच्चे को जन्म दिया। रेलवे कर्मचारियों की तत्परता, सहयात्रियों के सहयोग तथा विभिन्न विभागों के उत्कृष्ट समन्वय से प्रसव सुरक्षित रूप से संपन्न हुआ। वर्तमान में मां एवं नवजात दोनों स्वस्थ हैं तथा विरमगाम के अस्पताल में उनका उपचार एवं चिकित्सकीय देखभाल जारी है।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि दिनांक 02 जून, 2026 को अहमदाबाद से वेरावल की यात्रा कर रही एक गर्भवती महिला यात्री, जो कोच संख्या S-2 में अपने पति के साथ सफर कर रही थीं, को अहमदाबाद स्टेशन से ट्रेन प्रस्थान करने के कुछ समय बाद अचानक प्रसव पीड़ा शुरू हो गई। स्थिति की जानकारी महिला के पति एवं अन्य यात्रियों द्वारा ऑन ड्यूटी टिकट निरीक्षक (TTE) श्री रामजीवन कुमार को दी गई।

सूचना प्राप्त होते ही श्री रामजीवन कुमार ने बिना विलंब किए भावनगर मंडल के वाणिज्य नियंत्रण कार्यालय को स्थिति से अवगत कराया तथा तत्परता से रेलवे बेडशीट उपलब्ध कराया। इस बीच चांदलोडिया स्टेशन पार होने के बाद प्रसव पीड़ा बढ़ने पर कोच में उपस्थित महिला सहयात्रियों ने अत्यंत संवेदनशीलता एवं साहस का परिचय देते हुए गर्भवती महिला की सहायता की। उनके सहयोग से चलती ट्रेन में ही सुरक्षित प्रसव कराया गया और महिला ने एक स्वस्थ बच्चे को जन्म दिया।

घटना की जानकारी मिलते ही रेलवे प्रशासन ने आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित कीं। विरमगाम स्टेशन पर पूर्व समन्वय के तहत चिकित्सा सहायता एवं एम्बुलेंस की व्यवस्था की गई। महिला के पति की सहमति प्राप्त होने के उपरांत मां एवं नवजात को सुरक्षित रूप से ट्रेन से उतारकर एम्बुलेंस के माध्यम से विरमगाम के सरकारी अस्पताल भेजा गया। चिकित्सकों द्वारा जांच के पश्चात बताया गया कि मां एवं नवजात दोनों की स्थिति सामान्य एवं स्वस्थ है।

पूरे घटनाक्रम के दौरान ऑन ड्यूटी टीटीई श्री रामजीवन कुमार ने मानवीय संवेदनशीलता का परिचय देते हुए महिला एवं उसके परिजनों के लिए आवश्यक सहायता उपलब्ध कराई तथा चाय-पानी की व्यवस्था भी करवाई। उनकी तत्परता एवं कर्तव्यनिष्ठा की यात्रियों द्वारा सराहना की गई।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने इस सराहनीय कार्य के लिए संबंधित कर्मचारियों, विशेष रूप से ऑन ड्यूटी टीटीई श्री रामजीवन कुमार तथा सहयोग करने वाली महिला यात्रियों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि रेलवे केवल यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुंचाने का माध्यम नहीं, बल्कि आवश्यकता के समय उनके साथ खड़े रहने वाली एक संवेदनशील संस्था भी है। उन्होंने कर्मचारियों को भविष्य में भी इसी प्रकार यात्रियों की सहायता एवं सेवा के लिए सदैव तत्पर रहने हेतु प्रोत्साहित किया। यात्री परिवार ने रेलवे प्रशासन, ऑन ड्यूटी स्टाफ एवं सहयोग करने वाले सहयात्रियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उनकी त्वरित सहायता और मानवीय व्यवहार की सराहना की।

प्रतापनगर रेलवे स्टेशन का अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत कायाकल्प

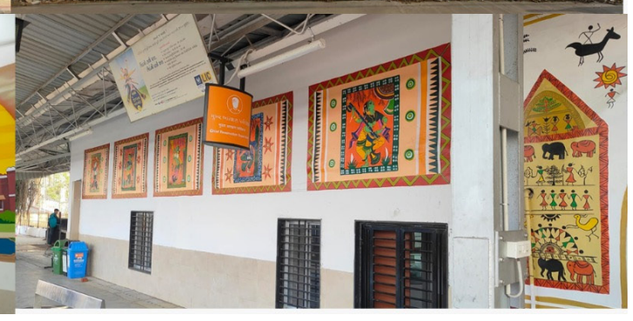

वडोदरा का प्रतापनगर स्टेशन अपने ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। यह वर्ष 1880 में नैरो गेज रेलवे के आगमन का प्रमुख केंद्र रहा है। वर्ष 1922 में यहां प्रतापनगर में एक महत्वपूर्ण रेलवे वर्कशॉप की स्थापना की गई थी। वर्तमान में इस स्टेशन को एक रणनीतिक सैटेलाइट स्टेशन के रूप में विकसित किया जा रहा है, जिससे वडोदरा स्टेशन पर यातायात का दबाव कम किया जा सके। यहां लंबी दूरी की ट्रेनों के संचालन तथा आधुनिक यात्री सुविधाओं की योजना है, जिससे क्षेत्रीय संपर्क और यात्रियों की सुविधा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त, यह स्टैच्यू ऑफ यूनिटी जाने वाले यात्रियों के लिए एक महत्वपूर्ण बोर्डिंग स्टेशन भी है।

वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के अनुसार प्रतापनगर रेलवे स्टेशन का यह व्यापक पुनर्विकास न केवल यात्रियों को बेहतर सुविधाएँ प्रदान करेगा, बल्कि वडोदरा शहर की रेलवे अवसंरचना को भी नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

यात्री सुविधाओं का विस्तार :

अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत लगभग 71.58 करोड़ रुपये की लागत से प्रतापनगर रेलवे स्टेशन का व्यापक पुनर्विकास का कार्य किया गया है जिससे इस स्टेशन को एक नया भव्य स्वरूप मिला है। पुनर्विकास परियोजना के अंतर्गत पुराने 1, 2 एवं 3 नंबर प्लेटफॉर्मों पर यात्री सुविधाओं का विस्तार किया गया है। साथ ही एक नए प्लेटफॉर्म नंबर 4 का विकास किया गया है, जिसमें उच्च स्तरीय प्लेटफॉर्मों का विस्तार एवं पुनर्संतहीकरण किया गया है। प्लेटफार्मों पर आधुनिक प्लेटफॉर्म शेल्टर तैयार किये गए है जिससे यात्रियों को बैठने की सुगम व्यवस्था उपलब्ध हो। नए स्टेशन भवन में नए विभिन्न कार्यालयों की स्थापना की गयी है। यात्रियों की सुविधा के लिए अतिरिक्त शौचालयों का निर्माण किया गया है। साथ ही आधुनिक साइनेज व्यवस्था तथा दिव्यांगजन-अनुकूल बुकिंग काउंटर सुविधाओं का विकास किया गया है। इसके अतिरिक्त, स्टेशन पर दो नई लिफ्टों की स्थापना भी की गई है।

आकर्षक द्वितीय प्रवेश द्वार :

प्रतापनगर स्टेशन के द्वितीय प्रवेश द्वार की तरफ नए स्टेशन भवन का निर्माण तथा वाणिज्यिक क्षेत्र के विकास का कार्य भी किया गया है, जिससे स्टेशन भवन का स्वरूप बेहद आकर्षक हुआ है। सेकंड एंट्री क्षेत्र में सुव्यवस्थित यातायात प्रबंधन, पर्याप्त पार्किंग सुविधा, स्पष्ट प्रवेश एवं निकास मार्ग तथा आधुनिक शहरी अवसंरचना विकसित की गई है।

कॉन्कोर्स क्षेत्र का आधुनिकीकरण :

यात्रियों को बेहतर अनुभव प्रदान करने के उद्देश्य से स्टेशन के कॉन्कोर्स क्षेत्र का भी आधुनिकीकरण किया गया है। आधुनिक फ्लोरिंग के साथ आकर्षक वॉल क्लैडिंग की गयी है, जिसमें रेलवे के इतिहास की झलक को उकेरा गया है। स्टेशन पर उन्नत प्रकाश व्यवस्था के साथ स्टेशन परिसर में कलात्मक भित्ति चित्र (म्यूरल्स) स्थापित किए गए हैं, जो स्टेशन को एक नया और आकर्षक स्वरूप प्रदान करते हैं।

दिव्यांगजन-अनुकूल सुविधाएं :

दिव्यांगजन यात्रियों के लिए प्लेटफार्म को सुगम, सुरक्षित एवं सुविधाजनक यात्रा सुनिश्चित करने हेतु सभी आवश्यक सुलभ सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं।दिव्यांगजन-अनुकूल बुकिंग काउंटर सुविधाओं का विकास किया गया है। फुट ओवर ब्रिज को लिफ्टों से भी जोड़ा गया है जिससे यात्रियों को प्लेटफार्मों पर जाने में सुगमता हासिल हो, जिससे यह स्टेशन पूर्णतः दिव्यांगजन-अनुकूल बन सके।

यह परियोजना भारतीय रेल के “यात्री सुविधा, सुगम यात्रा और आधुनिक स्टेशन” के संकल्प को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

आवागमन को सुगम बनाता 12 मीटर चौड़ा फुट ओवर ब्रिज :

स्टेशन के दोनों ओर के शहर तथा प्लेटफार्मों को जोड़ने के लिए 12 मीटर चौड़ा फुट ओवर ब्रिज का निर्माण किया गया है। यात्रियों की सुगम आवाजाही सुनिश्चित करने हेतु दोनों सिरों पर रैंप की सुविधा उपलब्ध कराने के साथ ही फुट ओवर ब्रिज को लिफ्टों से भी जोड़ा गया है जिससे यात्रियों को प्लेटफार्मों पर जाने में सुगमता हासिल हो, जिससे यह स्टेशन पूर्णतः दिव्यांगजन-अनुकूल बन सके।

यह परियोजना भारतीय रेल के “यात्री सुविधा, सुगम यात्रा और आधुनिक स्टेशन” के संकल्प को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

कोठगांगड़ गांव के निकट रेलवे द्वारा रिकॉर्ड समय में निर्मित जल निकासी संरचना से ग्रामीणों को मिलेगी बड़ी राहत

जन समस्याओं के निवारण करने की अपनी सतत प्रतिबद्धता के तहत पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल ने मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के दिशा निर्देशों के अनुरूप साबरमती–बोटाद रेलखंड पर कोठगांगड़ गांव के निकट किलोमीटर 76/6-7 पर 2 मीटर × 2 मीटर आकार के आरसीसी बॉक्स ब्रिज (जल मार्ग) का निर्माण एवं स्थापना कार्य सफलतापूर्वक संपन्न किया है। यह महत्वपूर्ण कार्य मात्र दो माह के रिकॉर्ड समय में पूर्ण किया गया।

दिनांक 01 जून 2026 को 200 टन क्षमता वाले क्रेन की सहायता से बॉक्स ब्रिज का सुरक्षित एवं सटीक रूप से सफलतापूर्वक इंसर्शन (Insertion) किया गया। इस परियोजना के पूर्ण होने से क्षेत्र की जल निकासी व्यवस्था में उल्लेखनीय सुधार होगा तथा मानसून के दौरान वर्षा जल के सुचारु प्रवाह को सुनिश्चित किया जा सकेगा।

विगत कई वर्षों से कोठगांगड़ गांव एवं पांजरापोल क्षेत्र में वर्षा ऋतु के दौरान जलभराव की समस्या उत्पन्न होती रही है, जिससे ग्रामीणों एवं पशुपालकों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। स्थानीय प्रतिनिधियों की मांग के अनुसार नव निर्मित 2 मीटर × 2 मीटर आकार का यह जल निकास वर्षा जल की निर्बाध निकासी सुनिश्चित करेगा तथा जलभराव की समस्या को काफी हद तक कम करने में सहायक सिद्ध होगा।

भावनगर मंडल द्वारा समयबद्ध योजना, तकनीकी दक्षता एवं समर्पित प्रयासों से पूर्ण की गई यह परियोजना रेलवे की जनहित एवं क्षेत्रीय विकास के प्रति प्रतिबद्धता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह कार्य न केवल रेलवे अवसंरचना को मजबूत करेगा, बल्कि आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के निवासियों के जीवन को भी अधिक सुगम एवं सुरक्षित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

03 जून को वडोदरा मंडल के वासद–रनोली स्टेशनों के बीच ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेने प्रभावित रहेगी

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल पर वासद-रनोली स्टेशनों के बीच ब्रिज नं. 624 (अप लाइन) पर री-गर्डरिंग कार्य हेतु 03 जून (बुधवार) को 11.15 बजे से 16.45 बजे तक 05.30 घंटे का मेगा ब्लॉक लिया जाएगा। जिसके कारण वडोदरा मंडल से चलने/गुजरने वाली कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेगी। जो इस प्रकार है:

पूर्णतः निरस्त ट्रेन

03 जून 2026 की ट्रेन संख्या 19036 मणिनगर–वड़ोदरा इंटरसिटी एक्सप्रेस पूर्णतः निरस्त रहेगी।

03 जून 2026 की ट्रेन संख्या 19035 वड़ोदरा-मणिनगर इंटरसिटी एक्सप्रेस पूर्णतः निरस्त रहेगी।

03 जून 2026 की ट्रेन संख्या 12930 वड़ोदरा- वलसाड इंटरसिटी एक्सप्रेस पूर्णतः निरस्त रहेगी।

आंशिक निरस्त ट्रेन

03 जून 2026 की ट्रेन संख्या 22960 जामनगर-वडोदरा इंटरसिटी एक्सप्रेस अहमदाबाद स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा अहमदाबाद-वडोदरा के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

रिशेड्यूल होने वाली ट्रेन

1. 03 जून 2026 की ट्रेन संख्या 12010 अहमदाबाद-मुंबई सेंट्रल शताब्दी एक्सप्रेस 40 मिनिट रिशेड्यूल रहेगी।

रेगुलेट होने वाली ट्रेने

1. 03 जून 2026 की ट्रेन संख्या 16533 भगत की कोठी–केएसआर बैंगलुरु एक्सप्रेस 55 मिनिट रेगुलेट रहेगी।
2. 03 जून 2026 की ट्रेन संख्या 12477 जामनगर–श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस 50 मिनिट रेगुलेट रहेगी।
3. 03 जून 2026 की ट्रेन संख्या 20626 भगत की कोठी–एमजीआर चेन्नई सेंट्रल एक्सप्रेस 55 मिनिट रेगुलेट रहेगी।

यात्रियों से निवेदन है कि उपरोक्त बदलाव को ध्यान में रखकर यात्रा करें। ट्रेनों के परिचालन समय, ठहराव और संरचना से सम्बंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

गुजरात पुलिस की नूतन पहल

पुलिस भवन में शुरू हुआ 'जनसंपर्क कार्यालय' नागरिकों के लिए बना विश्वास का नया पता

▸▸ गुजरात पुलिस की 'सुरक्षा, सेवा और विश्वास' की भावना को उजागर करने वाला सशक्त माध्यम बना जनसंपर्क कार्यालय : राज्य के पुलिस महानिदेशक डॉ. के. एल. एन. राव

▸▸ नागरिकों की समस्याओं का सिंगल-विंडो जैसी पारदर्शी व्यवस्था के माध्यम से समय पर समाधान

▸▸ राज्य के पुलिस महानिदेशक ने केंद्र का दौरा कर कामकाज की समीक्षा की

गांधीनगर : राज्य के नागरिकों और पुलिस तंत्र के बीच विश्वास तथा पारदर्शिता बढ़ाने के उद्देश्य से पुलिस भवन में 'जनसंपर्क कार्यालय' शुरू किया गया है। राज्य के पुलिस महानिदेशक डॉ. के. एल. एन. राव के मार्गदर्शन में संचालित इस कार्यालय के माध्यम से नागरिकों की शिकायतों, आवेदनों और समस्याओं का उचित एवं न्यायसंगत समाधान समय पर किया जा रहा है। मंगलवार को राज्य के पुलिस महानिदेशक ने इस केंद्र का दौरा कर इसके कामकाज की समीक्षा की।

पुलिस विभाग द्वारा शुरू की गई यह व्यवस्था आज नागरिकों के लिए न्याय प्राप्त करने का सुव्यवस्थित और सशक्त माध्यम बन चुका है। इस केंद्र का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक आवेदक की बात को सम्मानपूर्वक सुनना, जिला एवं शहर स्तर की पुलिस कार्यालयों के साथ समन्वय स्थापित कर समयबद्ध और पारदर्शी समाधान सुनिश्चित करना है। इस व्यवस्था से आवेदनों पर कार्रवाई में होने वाली देरी समाप्त हुई है और पुलिस के प्रति जनता का विश्वास और अधिक मजबूत हुआ है।

राज्य के पुलिस महानिदेशक डॉ. के. एल. एन. राव ने कहा कि जनसंपर्क कार्यालय केवल नागरिकों के आवेदन स्वीकार करने का केंद्र नहीं है, बल्कि यह गुजरात पुलिस की 'सुरक्षा, सेवा और विश्वास' की भावना को साकार करने का एक सशक्त माध्यम है। कार्यालय की सीढ़ियां चढ़कर आने वाला प्रत्येक सामान्य और गरीब व्यक्ति यहां से न्याय की आशा और संतोष के साथ लौटे, यह हमारी प्राथमिकता है। उन्होंने आगे कहा कि जनसंपर्क कार्यालय में प्राप्त होने वाले आवेदनों को प्राथमिकता देकर उनका त्वरित समाधान सुनिश्चित करने के लिए जिला स्तर पर भी निर्देश दिए गए हैं।

पहले नागरिकों को शिकायत या प्रस्तुति दर्ज कराने के लिए विभिन्न कार्यालयों के चक्कर लगाने पड़ते थे। अब इस सिंगल-विंडो जैसी पारदर्शी व्यवस्था के माध्यम से समय पर शिकायतों का निवारण संभव हो पाया है। आइए, जनसंपर्क केंद्र की संपूर्ण कार्यप्रणाली को समझते हैं :

आवेदन स्वीकार करना और प्रारंभिक पंजीकरण

केंद्र पर आने वाले प्रत्येक नागरिक का विवरण रिसेप्शन डेस्क पर दर्ज किया जाता है। उन्हें सुनवाई के लिए अनुकूल और तनावमुक्त वातावरण उपलब्ध कराया जाता है।

अधिकारी द्वारा प्रत्यक्ष सुनवाई

उपस्थित वरिष्ठ एवं जिम्मेदार अधिकारियों द्वारा आवेदक प्रस्तुतियों को ध्यानपूर्वक सुनकर मामले का विवरण दर्ज किया जाता है।

पंजीकरण और त्वरित प्रक्रिया

केंद्र के माध्यम से प्राप्त सभी शिकायतों और प्रस्तुतियों का विधिवत पंजीकरण कर आवश्यक कार्रवाई के लिए संबंधित जिला अथवा शहर पुलिस इकाइयों एवं संबद्ध शाखाओं को भेजा जाता है।

रिपोर्ट तथा समीक्षा

फील्ड यूनिट के पास से निर्धारित समय में जरुरी रिपोर्ट मंगाकर उसका सूक्ष्म परीक्षण किया जाता है तथा आगे की कार्रवाई के लिए वरिष्ठ अधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है।

दो स्तरीय फीडबैक प्रणाली

सेवा सुधार के लिए कार्यालय एवं जिला स्तर; इन दो प्रकारों से विस्तृत फीडबैक फॉर्म भरवाए जाते हैं। टेलीफोन द्वारा संपर्क कर केस की प्रगति की जानकारी भी दी जाती है।

गत 2 फरवरी से शुरू किए गए इस जनसंपर्क कार्यालय में प्राप्त शिकायतों में से अधिकांश का त्वरित तथा सटीक निवारण किया गया है। भावनगर के श्री जिगरभाई भट्ट ने गांधीनगर स्थित जनसंपर्क कार्यालय का संपर्क किया। कार्यालय के त्वरित फॉलोअप तथा पीआई पलक व पीएसआई एम. जे. पटेल के सहयोग से आवेदक की सम्बद्ध आईपीएस श्रीमती अमिता वनाणी से मुलाकात करवाकर उनके केस के आरोपी को त्वरित गिरफ्तार किया गया और उनकी समस्या का निवारण किया गया। साणंद के आवेदक नरेशभाई दुलेरा ने इस सेवा को आम आदमी के लिए न्याय की आशा किरण तथा जनहित के लिए शुरू की गई उत्तम पहल बताया। जनसंपर्क कार्यालय केवल आवेदन स्वीकार करने का केन्द्र नहीं है, बल्कि पुलिस एवं जनता के बीच विश्वास का सुदृढ़ सेतु है। यह नागरिक केंद्रित दृष्टिकोण पुलिस प्रशासन को अधिक लोकभोग्य, लोकोपयोगी और जिम्मेदार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

वाल्मीकि समाज ने अखिल भारतीय सफाईकर्मी कांग्रेस के नेता छगनभाई सोलंकी को श्रद्धांजलि अर्पित की

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। छगनभाई सोलंकी ने वर्षों तक अखिल भारतीय सफाई कर्मचारी कांग्रेस के नेता के रूप में कार्य किया। वे सन् 1960 से समाज के जरूरतमंद बच्चों को पाठ्यपुस्तकें और नोटबुक उपलब्ध कराते आ रहे थे। वडोदरा शहर के वाल्मीकि समुदाय के सामाजिक कार्यकर्ताओं जैसे अंबालाल मोतीलाल सोलंकी मोरखाला, दलपतसिंह सोलंकी गोत्री, मगनभाई देसाई वडोदरा, वडोदरा जिले के अनुभवी सामाजिक कार्यकर्ता सोमभाई कालिदास सोलंकी, रश्मिकांत शंकरलाल वैष्णव, मनीलाल सोलंकी और अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओं ने वडोदरा शहर और जिले के वाल्मीकि समुदाय के उत्थान और समाज के विकास के लिए सराहनीय कार्य किए, लेकिन छगनभाई सोलंकी की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण थी। सन् 1950 से 1980 के बीच वे वडोदरा शहर में कई बड़े सम्मेलन और सभाएं आयोजित करते थे और सामाजिक जागरूकता के लिए प्रयास करते थे। उनके दुखद निधन पर गुजरात प्रदेश वाल्मीकि समाज और गुजरात प्रदेश नगर निगम कर्मचारी कांग्रेस के अध्यक्ष भाई लाल बी. वैष्णव ने उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। ईश्वर उनकी आत्मा को शाश्वत शांति प्रदान करें। गुजरात प्रदेश वाल्मीकि समाज के महासचिव कांतिभाई सोलंकी आदि ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की है। उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की है कि वे उनके परिवार पर आई विपत्ति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

गुजरात तट पर मादक पदार्थों की तस्करी में वृद्धिः सुरक्षा व्यवस्था के लिए एक गंभीर चुनौती

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। गुजरात के सामने सबसे बड़ी चुनौती इसकी विशाल तटरेखा है। इसलिए, इस लंबी तटरेखा पर चलने वाले बड़ी संख्या में पंजीकृत छोटे जहाजों और नौकाओं की निगरानी के लिए एक मजबूत तंत्र स्थापित करना अनिवार्य है। यह तटरेखा वाणिज्यिक और सुरक्षा दोनों ही दृष्टियों से संवेदनशील क्षेत्र है। अतः, सीमा पार तस्करी के माध्यम से पूरे देश में मादक पदार्थों की लत का जाल फैलाने वाले संगठित गिरोहों पर शिकंजा कसना अत्यंत आवश्यक है।

देश में अवैध मादक पदार्थों का बढ़ता प्रचलन एक गंभीर समस्या बनकर उभरा है। इसका प्रसार तेजी से हो रहा है। यह खतरा बड़े शहरों से लेकर दूरदराज के गांवों तक फैल चुका है। भूमि और समुद्री मार्गों से अन्य देशों से मादक पदार्थों की बड़े पैमाने पर तस्करी जारी है। हाल ही में, तटरक्षक बल और गुजरात आतंकवाद-विरोधी दस्ते (एटीएस) ने एक संयुक्त अभियान में कच्छ के मुंद्रा तट के पास एक जहाज से लगभग 1150 करोड़ रुपये मूल्य के मादक पदार्थ जब्त किए। सवाल यह है कि गुजरात अधिकाधिक मादक पदार्थों का पारगमन केंद्र क्यों बनता जा रहा है? पिछले कुछ वर्षों से राज्य में सुरक्षा बल इस तरह की अवैध गतिविधियों से निपटने के लिए लगातार अभियान चला रहे हैं। इन तमाम प्रयासों के बावजूद अगर समुद्री मार्गों से होने वाली मादक पदार्थों की तस्करी पर लगाम नहीं लग पा रही है, तो इसके मूल कारण क्या हो सकते हैं? आखिर सुरक्षा एजेंसियां समुद्री मार्गों से इतनी बड़ी मात्रा में मादक पदार्थों की तस्करी करने और उन्हें देश के विभिन्न हिस्सों में वितरित करने वाले मुख्य अपराधियों को पकड़ने में असमर्थ क्यों हैं? क्योंकि पिछले पांच वर्षों से गुजरात के तटीय इलाकों में लगातार हो रही ड्रग्स की बरामदगी से यह स्पष्ट होता है कि यहाँ ड्रग्स की तस्करी लगातार जारी है। जब तक इन ड्रग माफिया नेटवर्क को जड़ से खत्म नहीं किया जाता, तब तक ये मौत के सौदागर ड्रग्स के जहर से हमारे देश को तबाह करते रहेंगे। देश का विकास जारी रहेगा, लेकिन देश को विनाश की ओर ले जा रहे इन दुष्ट तत्वों की पहचान करना और उन्हें तुरंत खत्म करना बेहद जरूरी है।

तिरुमाला मंदिर में भक्तों की आस्था का अनूठा संगमः मई में 12.43 लाख से अधिक चमड़ा छीलने का रिकॉर्ड

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। आंध्र प्रदेश के विश्व के सबसे धनी मंदिर तिरुमाला में, 1 से 27 मई के बीच 12,43,063 श्रद्धालुओं ने अपने सिर मुंडवाकर भगवान को अर्पित किए। यह आंकड़ा पिछले दो वर्षों के मई माह में सिर मुंडवाने वालों की संख्या से कहीं अधिक है। मई 2025 में 10,18,370 श्रद्धालुओं ने और मई 2024 में 10,65,729 श्रद्धालुओं ने सिर मुंडवाया था।

भगवान वेंकटेश्वर, जिन्हें बोलचाल की भाषा में तिरुपति बालाजी भी कहा जाता है, को बाल अर्पित करने की परंपरा ग्रीष्म ऋतु में काफी बढ़ गई है। पिछले महीने के पहले 27 दिनों में सिर मुंडवाने वाले भक्तों की संख्या ने विश्व के सबसे बड़े "कल्याण कट्टा" या मुंडन केंद्र का रिकॉर्ड बना दिया है।

तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) के अधिकारियों ने बालों के दान में हुई वृद्धि का कारण मौजूदा भीषण गर्मी को बताया है। मानव बाल को काला सोना कहा जाता है और दुनिया भर के बाजारों में इसकी काफी मांग है।

टीटीडी मानव बाल बेचकर प्रतिवर्ष 130 करोड़ रुपये से अधिक की कमाई करता है। यह आस्था और सेवा का अनूठा संगम है। आय का एक बड़ा हिस्सा मंदिर में जमा होता है।

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में बड़ा कदमः अब जैव-विघटित पाउच में मिलेगा मदर डेयरी का दूध

नई दिल्ली। बढ़ते प्लास्टिक प्रदूषण और पर्यावरणीय चुनौतियों के बीच देश की प्रमुख डेयरी कंपनी मदर डेयरी ने एक महत्वपूर्ण और दूरगामी पहल की घोषणा की है। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 5 जून से कंपनी दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में अपने गाय के दूध की बिक्री ऐसे विशेष पाउच में शुरू करेगी, जो प्राकृतिक रूप से मिट्टी में विघटित हो सकेंगे। इस कदम को देश के डेयरी क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल माना जा रहा है।

पिछले कई वर्षों से प्लास्टिक कचरा दुनिया भर के देशों के लिए गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है। दूध, खाद्य पदार्थों और दैनिक उपयोग की वस्तुओं की पैकेजिंग में बड़ी मात्रा में प्लास्टिक का उपयोग किया जाता है, जो लंबे समय तक पर्यावरण में बना रहता है। इसके कारण मिट्टी, जल स्रोतों और पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ऐसे समय में मदर डेयरी की यह पहल पर्यावरण संरक्षण और टिकाऊ विकास के प्रयासों को नई दिशा देने वाली मानी जा रही है।

राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) के अध्यक्ष मीनेश शाह ने इस नई तकनीक की जानकारी देते हुए बताया कि कंपनी द्वारा विकसित किए गए नए दूध पाउच इस प्रकार तैयार किए गए हैं कि वे कुछ वर्षों के भीतर प्राकृतिक रूप से मिट्टी में विघटित हो जाएंगे। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस पर्यावरण-अनुकूल पहल का बोझ उपभोक्ताओं पर नहीं डाला जाएगा और दूध की कीमतों में किसी प्रकार की वृद्धि नहीं की जाएगी। इससे उपभोक्ताओं को बिना अतिरिक्त खर्च के पर्यावरण हितैषी उत्पाद प्राप्त होंगे।

विशेषज्ञों के अनुसार भारत में प्रतिदिन लाखों लीटर दूध की आपूर्ति प्लास्टिक पाउचों के माध्यम से की जाती है। उपयोग के बाद इनमें से बड़ी मात्रा में पाउच कचरे के रूप में पर्यावरण में पहुंच जाते हैं। यद्यपि पुनर्चक्रण की व्यवस्था मौजूद है, लेकिन वास्तविकता यह है कि बड़ी मात्रा में प्लास्टिक पुनर्चक्रण प्रक्रिया तक नहीं पहुंच पाता। ऐसे में जैव-विघटित पैकेजिंग का उपयोग भविष्य के लिए एक प्रभावी समाधान माना जा रहा है।

मदर डेयरी द्वारा प्रस्तुत नई पैकेजिंग में विशेष प्रकार की उन्नत तकनीक का उपयोग किया गया है। कंपनी के अनुसार यह सामग्री समय के साथ प्राकृतिक प्रक्रिया के माध्यम से जैव-उपलब्ध मोम में परिवर्तित हो जाती है। इसके बाद मिट्टी में मौजूद सूक्ष्मजीव इस पदार्थ को धीरे-धीरे विघटित कर पर्यावरण में मिला देते हैं। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान प्लास्टिक के स्थायी और हानिकारक अवशेष नहीं बचते, जो पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मीनेश शाह ने कहा कि यह केवल एक नया उत्पाद नहीं, बल्कि देश के डेयरी उद्योग में एक नई सोच का प्रतिनिधित्व करता है। उनके अनुसार भारत में पहली बार किसी बड़े स्तर पर दूध वितरण के लिए ऐसा पाउच उपयोग में लाया जा रहा है, जो प्राकृतिक रूप से नष्ट होने की क्षमता रखता है। उन्होंने उम्मीद जताई कि आने वाले समय में अन्य डेयरी कंपनियां भी इस दिशा में कदम बढ़ाएंगी और पूरे उद्योग में पर्यावरण-अनुकूल पैकेजिंग को बढ़ावा मिलेगा।

मदर डेयरी के प्रबंध निदेशक जयतीर्थ चारी ने बताया कि इस तकनीक को विकसित करने में चार वर्षों से अधिक समय तक अनुसंधान और परीक्षण किया गया है। वैज्ञानिकों, तकनीकी विशेषज्ञों और पैकेजिंग इंजीनियरों की टीम ने यह सुनिश्चित करने के लिए लगातार कार्य किया कि नई पैकेजिंग दूध की गुणवत्ता, सुरक्षा और भंडारण क्षमता पर किसी प्रकार का नकारात्मक प्रभाव न डाले। कई चरणों के परीक्षण और गुणवत्ता मूल्यांकन के बाद इस तकनीक को व्यावसायिक उपयोग के लिए तैयार किया गया।

उन्होंने बताया कि नया पाउच केवल जैव-विघटित ही नहीं है, बल्कि पुनर्चक्रण योग्य भी है। इससे दोहरा लाभ प्राप्त होगा। एक ओर यदि पाउच पुनर्चक्रण प्रणाली तक पहुंचता है तो उसका पुनः उपयोग किया जा सकेगा, वहीं यदि वह पर्यावरण में पहुंच भी जाए तो लंबे समय तक प्रदूषण का कारण नहीं बनेगा। यह विशेषता इसे पारंपरिक प्लास्टिक पैकेजिंग से अलग बनाती है।

पर्यावरण विशेषज्ञों ने मदर डेयरी की इस पहल का स्वागत किया है। उनका मानना है कि भारत जैसे विशाल उपभोक्ता बाजार में यदि बड़े पैमाने पर जैव-विघटित पैकेजिंग का उपयोग शुरू होता है तो इसका सकारात्मक प्रभाव राष्ट्रीय स्तर पर दिखाई देगा। इससे प्लास्टिक कचरे की मात्रा में कमी आएगी और नगर निकायों पर कचरा प्रबंधन का दबाव भी कम होगा।

देश में हर वर्ष लाखों टन प्लास्टिक कचरा उत्पन्न होता है। केंद्र और राज्य सरकारें लगातार एकल-उपयोग प्लास्टिक को कम करने तथा टिकाऊ विकल्पों को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य कर रही हैं। ऐसे में निजी क्षेत्र की कंपनियों की भागीदारी इस अभियान को और प्रभावी बना सकती है।

अहमदाबाद में सड़क विकास के लिए बड़ा अभियान, अतिक्रमण हटाकर खाली कराई 4,000 वर्ग मीटर सरकारी भूमि

स्टेट हाईवे-17 के चौड़ीकरण का रास्ता साफ, प्रशासन ने दरगाहों, दुकानों और कब्रिस्तान के हिस्से पर की कार्रवाई; भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच अभियान शांतिपूर्वक संपन्न

अहमदाबाद। गुजरात के अहमदाबाद जिले में सड़क अवसंरचना को मजबूत बनाने और क्षेत्रीय संपर्क व्यवस्था को बेहतर करने की दिशा में जिला प्रशासन ने एक महत्वपूर्ण कार्रवाई करते हुए स्टेट हाईवे-17 के चौड़ीकरण के लिए बड़े पैमाने पर अतिक्रमण हटाने का अभियान चलाया। प्रशासन द्वारा संचालित इस अभियान के दौरान सरकारी भूमि पर बने विभिन्न निर्माणों को हटाया गया, जिनमें धार्मिक और व्यावसायिक संरचनाएं भी शामिल थीं। अधिकारियों के अनुसार कार्रवाई का उद्देश्य केवल सड़क विस्तार परियोजना के लिए आवश्यक भूमि उपलब्ध कराना था, ताकि लंबे समय से प्रस्तावित विकास कार्यों को गति दी जा सके।

प्रशासनिक अधिकारियों ने बताया कि स्टेट हाईवे-17 अहमदाबाद को सुरेंद्रनगर जिले के चोटिला क्षेत्र से जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण मार्ग है। यह सड़क मध्य गुजरात और सौराष्ट्र क्षेत्र के बीच आवागमन का प्रमुख माध्यम मानी जाती है तथा अहमदाबाद से राजकोट की ओर जाने वाले हजारों वाहनों का प्रतिदिन इसी मार्ग से आवागमन होता है। लगातार बढ़ते यातायात दबाव और भविष्य की आवश्यकताओं को देखते हुए सरकार ने इस मार्ग के चौड़ीकरण और आधुनिकीकरण का निर्णय लिया था।

इसी परियोजना के अंतर्गत सोमवार को अहमदाबाद जिले के विरामगाम क्षेत्र में व्यापक अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया गया। अधिकारियों के अनुसार जिन संरचनाओं को हटाया गया उनमें तीन दरगाहें, छह दुकानें तथा एक कब्रिस्तान का सीमित हिस्सा शामिल था। प्रशासन का कहना है कि सभी निर्माण सरकारी भूमि पर सड़क परियोजना की निर्धारित सीमा के भीतर आ रहे थे और परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए इन्हें हटाना आवश्यक था।

अभियान की संवेदनशीलता को देखते हुए जिला प्रशासन और पुलिस विभाग ने पहले से ही व्यापक तैयारियां की थीं। अधिकारियों ने बताया कि पिछले दो महीनों से इस कार्रवाई की योजना बनाई जा रही थी और संबंधित सभी पक्षों के साथ लगातार संवाद किया गया था। स्थानीय समुदायों, धार्मिक प्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनों और क्षेत्रीय नागरिकों के साथ कई दौर की बैठकें आयोजित की गईं ताकि सड़क परियोजना की आवश्यकता और कानूनी प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी जा सके।

अहमदाबाद ग्रामीण क्षेत्र के पुलिस अधिकारियों के अनुसार अभियान को शांतिपूर्ण और व्यवस्थित ढंग से संपन्न कराने के लिए सुरक्षा के विशेष इंतजाम किए गए थे। राज्य रिजर्व पुलिस बल की दो कंपनियों सहित 550 से अधिक पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया। पूरे क्षेत्र में सुरक्षा घेरा बनाकर कार्रवाई की गई ताकि किसी प्रकार की अप्रिय घटना या कानून-व्यवस्था की समस्या उत्पन्न न हो।

अधिकारियों के मुताबिक कब्रिस्तान का केवल वही हिस्सा हटाया गया जो सड़क चौड़ीकरण परियोजना की सीमा में आ रहा था। प्रशासन ने स्पष्ट किया कि लगभग छह मीटर भूमि परियोजना के लिए आवश्यक थी और इसी कारण सीमित क्षेत्र में कार्रवाई की गई। इस दौरान स्थानीय प्रतिनिधियों और समुदाय के जिम्मेदार लोगों को भी पूरी प्रक्रिया की जानकारी दी गई।

पुलिस और प्रशासन का कहना है कि अभियान के दौरान कहीं से किसी बड़े विरोध, तनाव या हिंसक प्रतिक्रिया की सूचना नहीं मिली। पूरी कार्रवाई कानून के दायरे में और पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार संपन्न की गई। अधिकारियों ने इसे प्रशासन और स्थानीय समुदायों के बीच संवाद और सहयोग का सकारात्मक उदाहरण बताया।

गंगासर झील के आसपास का क्षेत्र इस कार्रवाई का प्रमुख केंद्र रहा। अधिकारियों के अनुसार स्टेट हाईवे-17 के लगभग 400 मीटर लंबे हिस्से पर विभिन्न प्रकार के अतिक्रमण मौजूद थे, जिसके कारण सड़क विस्तार कार्य प्रभावित हो रहा था। अभियान के बाद करीब 4,000 वर्ग मीटर सरकारी भूमि को अतिक्रमण मुक्त कराया गया है। अब इस भूमि का उपयोग सड़क चौड़ीकरण और अन्य अवसंरचनात्मक कार्यों के लिए किया जाएगा।

परियोजना से जुड़े अधिकारियों का कहना है कि सड़क चौड़ीकरण पूरा होने के बाद क्षेत्र में यातायात व्यवस्था में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिलेगा। वर्तमान में यह मार्ग कई स्थानों पर संकरा होने के कारण दुर्घटनाओं और यातायात जाम की समस्या का सामना करता है। सड़क के विस्तारित होने से न केवल यात्रा समय कम होगा बल्कि भारी वाहनों और माल परिवहन को भी सुविधा मिलेगी।

राज्य सरकार का मानना है कि बेहतर सड़क नेटवर्क क्षेत्रीय विकास का आधार बनता है। अहमदाबाद, सुरेंद्रनगर और राजकोट जैसे महत्वपूर्ण शहरों को जोड़ने वाले इस मार्ग के उन्नयन से व्यापार, उद्योग, कृषि परिवहन और पर्यटन गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलेगा। स्थानीय व्यवसायों और परिवहन क्षेत्र से जुड़े लोगों को भी इससे दीर्घकालिक लाभ मिलने की उम्मीद है।

अधिकारियों ने बताया कि मुख्यमंत्री द्वारा पिछले वर्ष इस सड़क परियोजना का शुभारंभ किया गया था और तब से इसके विभिन्न चरणों पर कार्य चल रहा है। सड़क के आधुनिकीकरण के तहत चौड़ीकरण, बेहतर जल निकासी व्यवस्था, सुरक्षा सुविधाएं और यातायात प्रबंधन से जुड़े कई सुधार किए जाने हैं। परियोजना पूरी होने के बाद यह मार्ग आधुनिक मानकों के अनुरूप विकसित हो जाएगा।

सूरत में भीषण बस हादसाः टक्कर के बाद आग का तांडव, कई यात्री जिंदा जले; 7 की मौत, दर्जनों घायल

सूरत। गुजरात के सूरत जिले में मंगलवार को हुए एक भयावह सड़क हादसे ने पूरे क्षेत्र को झकझोर कर रख दिया। बारडोली के निकट धुलिया राजमार्ग पर दो यात्री बसों की आमने-सामने हुई भीषण टक्कर के बाद एक बस में आग लग गई, जिससे कई यात्रियों को संभलने तक का मौका नहीं मिला। हादसे में कम से कम सात लोगों की मौत की पुष्टि हुई है, जबकि अनेक यात्री गंभीर रूप से घायल बताए जा रहे हैं। प्रशासन को आशंका है कि घायलों में कुछ की हालत अत्यंत गंभीर होने के कारण मृतकों की संख्या बढ़ सकती है।

यह दुर्घटना बारडोली तालुका के उवा और मानेकपुर गांवों के बीच उस समय हुई, जब गुजरात राज्य परिवहन निगम की एक बस और महाराष्ट्र राज्य परिवहन की एक बस आमने-सामने टकरा गईं। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार टक्कर इतनी जोरदार थी कि गुजरात परिवहन निगम की बस संतुलन खोकर सड़क पर पलट गई। दुर्घटना के कुछ ही क्षण बाद बस से धुआं निकलना शुरू हुआ और देखते ही देखते उसमें आग भड़क उठी।

मौके पर मौजूद लोगों ने बताया कि आग लगने से पहले एक तेज धमाके जैसी आवाज भी सुनाई दी, जिसके बाद बस के भीतर बैठे यात्रियों में अफरा-तफरी मच गई। कुछ यात्री खिड़कियों और आपातकालीन निकास के रास्ते बाहर निकलने में सफल रहे, लेकिन कई लोग बस के अंदर ही फंस गए। आग इतनी तेजी से फैली कि उन्हें बाहर निकलने का अवसर नहीं मिल पाया।

प्रारंभिक जानकारी के अनुसार मृतकों में कुछ ऐसे यात्री भी शामिल हैं जो आग की लपटों में घिरकर जिंदा जल गए।

अधिकारियों के मुताबिक महाराष्ट्र राज्य परिवहन की बस धुलिया से नवापुर होते हुए सूरत की ओर जा रही थी। इसी दौरान सामने से आ रही दूसरी बस के साथ उसकी टक्कर हो गई। दुर्घटना के वास्तविक कारणों की जांच शुरू कर दी गई है। पुलिस विभिन्न पहलुओं की जांच कर रही है, जिनमें वाहन की गति, सड़क की स्थिति, चालक की प्रतिक्रिया और तकनीकी कारण शामिल हैं।

हादसे के तुरंत बाद स्थानीय लोगों ने राहत कार्य शुरू कर दिया और बस में फंसे यात्रियों को बाहर निकालने का प्रयास किया। कुछ ही देर में पुलिस, प्रशासन और अग्निशमन विभाग की टीमें भी घटनास्थल पर पहुंच गईं। बारडोली फायर ब्रिगेड के जवानों ने आग बुझाने के लिए कई दमकल वाहनों की मदद ली। काफी मशक्कत के बाद आग पर नियंत्रण पाया जा सका, लेकिन तब तक भारी नुकसान हो चुका था। राहत और बचाव दलों ने घायल यात्रियों को तत्काल नजदीकी अस्पतालों में पहुंचाया। कई घायलों को गंभीर हालत में भर्ती कराया गया है, जहां उनका इलाज जारी है। चिकित्सकों का कहना है कि कुछ मरीजों की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। प्रशासन ने अस्पतालों को अलर्ट पर रखा है और जरूरत पड़ने पर अतिरिक्त चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं।

दुर्घटना की सूचना मिलते ही जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी भी मौके पर पहुंच गए। घटनास्थल का निरीक्षण करने के बाद अधिकारियों ने राहत एवं बचाव कार्यों की समीक्षा की और घायलों को हर संभव सहायता उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। मृतकों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है और उनकी पहचान की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई है।

इस दर्दनाक हादसे ने एक बार फिर सड़क सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि लंबी दूरी की यात्री बसों में सुरक्षा मानकों का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। दुर्घटना के बाद आग लगने की घटनाएं अक्सर अधिक जानलेवा साबित होती हैं क्योंकि यात्रियों को बाहर निकलने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता। ऐसे मामलों में आपातकालीन निकास, अग्निशमन उपकरण और नियमित तकनीकी जांच की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। हादसे की खबर सामने आते ही पूरे देश में शोक की लहर फैल गई। प्रधानमंत्री Narendra Modi ने भी इस दुर्घटना पर गहरा दुख व्यक्त किया। प्रधानमंत्री कार्यालय की ओर से जारी संदेश में कहा गया कि सूरत जिले में हुई दुर्घटना अत्यंत दुखद है और जिन परिवारों ने अपने प्रियजनों को खोया है, उनके प्रति गहरी संवेदनाएं व्यक्त की गई हैं। साथ ही घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना भी की गई।

संदेश में यह भी कहा गया कि स्थानीय प्रशासन और राहत एजेंसियां घटनास्थल पर हर संभव सहायता उपलब्ध कराने में जुटी हुई हैं।

राज्य सरकार ने भी दुर्घटना की जांच के आदेश दिए हैं। अधिकारियों का कहना है कि हादसे के कारणों का पता लगाने के लिए विस्तृत जांच की जाएगी और यदि किसी प्रकार की लापरवाही सामने आती है तो जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। परिवहन विभाग भी दोनों बसों की तकनीकी स्थिति और परिचालन रिकॉर्ड की जांच करेगा।

स्थानीय लोगों के अनुसार दुर्घटना का दृश्य अत्यंत भयावह था। सड़क पर पलटी बस, उसमें उठती आग की ऊंची लपटें और मदद के लिए पुकारते यात्री लंबे समय तक लोगों के मन में बने रहेंगे। कई प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि उन्होंने अपनी आंखों के सामने यात्रियों को बस से बाहर निकालने की कोशिश की, लेकिन आग की तीव्रता के कारण सभी तक पहुंच पाना संभव नहीं हो सका। सूरत और आसपास के क्षेत्रों में इस हादसे के बाद शोक का माहौल है। प्रशासन ने मृतकों के परिजनों से संपर्क करना शुरू कर दिया है और उन्हें आवश्यक सहायता उपलब्ध कराने की प्रक्रिया जारी है। वहीं अस्पतालों में भर्ती घायलों के परिवारजन भी लगातार उनके स्वास्थ्य की जानकारी ले रहे हैं।

यह दुर्घटना केवल एक सड़क हादसा नहीं, बल्कि कई परिवारों के लिए जीवनभर का दर्द बन गई है। जिन लोगों ने अपने परिजनों को खोया है, उनके लिए यह क्षति अपूरणीय है। अब सभी की निगाहें जांच रिपोर्ट पर टिकी हैं, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि आखिर इतनी भयावह दुर्घटना कैसे हुई और भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए क्या कदम उठाए जाने चाहिए।